तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च - 2019, रु. 5/-

२०१९, मार्च १६ से २० तक
तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
प्लवोत्सव

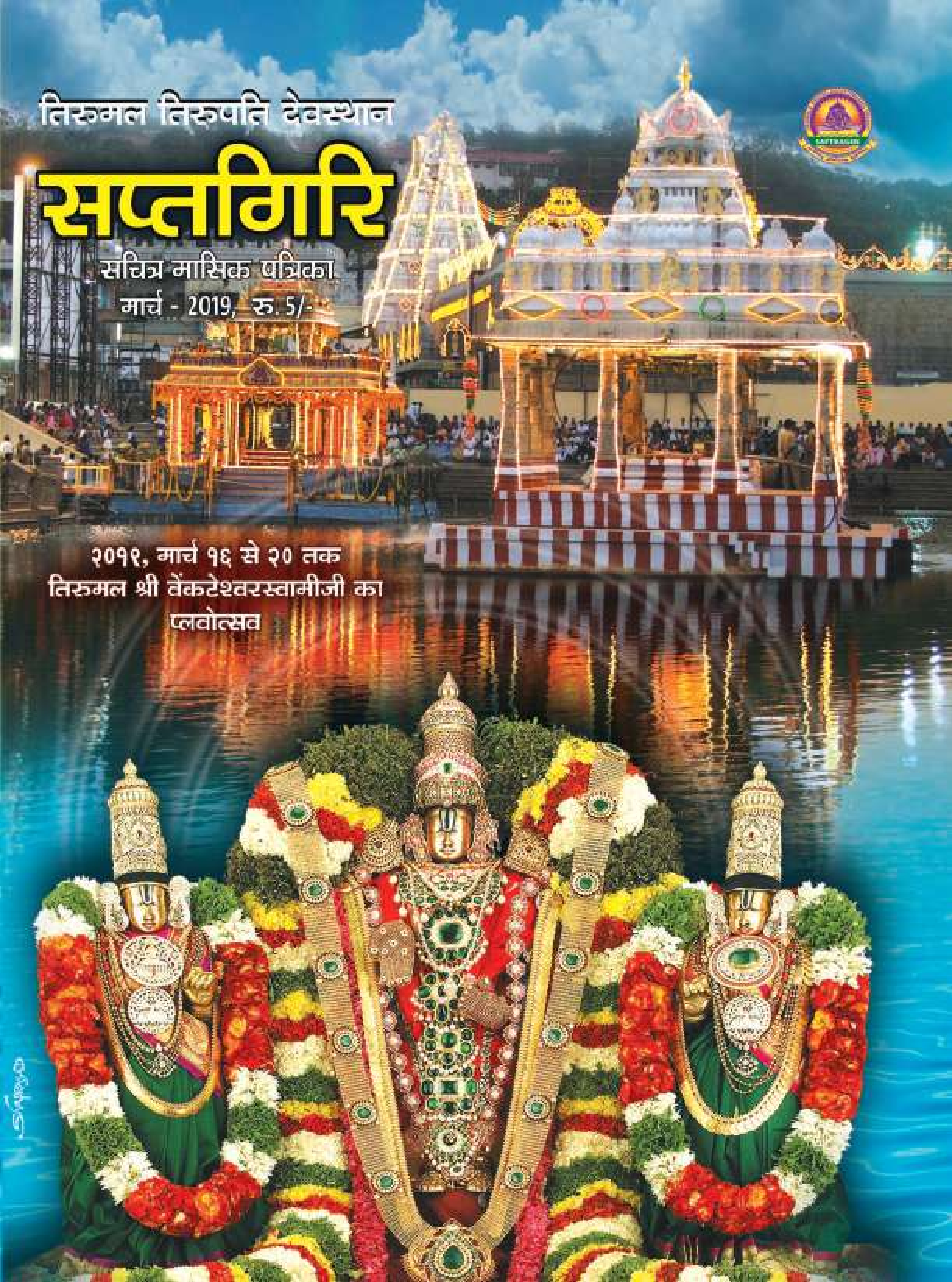

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री लक्ष्मीदेवी

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

तरिगोंडा

श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

१३.०३.२०११ से २१.०३.२०११ तक

१३.०३.२०११ बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

१४.०३.२०११ गुरुवार
दिन - मोतीवितानवाहन
रात - हनुमद्वाहन

१५.०३.२०११ शुक्रवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सिंहवाहन

१६.०३.२०११ शनिवार
दिन - तिरुचि उत्सव
रात - महाशेषवाहन

१७.०३.२०११ रविवार
दिन - तिरुचि उत्सव
रात - गजवाहन

१८.०३.२०११ सोमवार
दिन - तिरुचि उत्सव
सायं - सर्वभूपालवाहन
रात - गरुडवाहन

१९.०३.२०११ मंगलवार
दिन - रथयात्रा
सायं - धूलि उत्सव

२०.०३.२०११ बुधवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन, अश्ववाहन

२१.०३.२०११ गुरुवार
दिन - वसंतोत्सव, चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।।
(- श्रीमद्‌भगवद्‌गीता ६-१)

श्री भगवान बोले - जो पुरुष कर्म फल का आश्रय न लेकर करने योग्य कर्म करता है, वह सन्यासी तथा योगी है और केवल अग्नि का त्याग करने वाला सन्यासी नहीं है तथा केवल क्रियाओं का त्याग करने वाला योगी नहीं है।

इदं शास्त्रं मया प्रोक्तं गुह्य वेदार्थदर्पणम्।
यः पठेत्प्रयतो भूत्वा सगच्छेद्विष्णु शाश्वतम्।।
(- गीता मकरंद, गीता का प्रभाव-२)

"मेरे द्वारा प्रस्तुत यह गीता शास्त्र गोपनीय वेदार्थों को दर्पण की भांति प्रतिबिंबित कर रहा है। जो प्रयत्न कर इसका पठन करेगा वह शाश्वत रूप से विष्णुपद प्राप्त करेगा।"

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल श्री बालाजी मंदिर : अर्जित सेवाएँ/उत्सव

क्रम सं.	सेवा / उत्सव का नाम	दिन	प्रवेश समय/सेवा का समय	व्यक्तियों को प्रवेश	टिकट का दाम रु.
	दैनिक सेवाएँ				
1.	सुप्रभात	प्रतिदिन	प्रातः 2-00 से 3-00 बजे	एक	120-00
2.	तोमाल सेवा	मंगल, बुध, गुरु	प्रातः 3-00 से 3-30 बजे	एक	220-00
3.	अर्चना	मंगल, बुध, गुरु	प्रातः 4-00 से 4-30 बजे	एक	220-00
	दैनिक उत्सव				
4.	कल्याणोत्सव	प्रतिदिन	दोपहर 10-00 से 12-00 बजे	दो	1,000-00
5.	डोलोत्सव (ऊँजल सेवा)	प्रतिदिन	दोपहर 11-00 से 1-00 बजे	एक	200-00
6.	अर्जित ब्रह्मोत्सव	प्रतिदिन	दोपहर 12-30 से 2-00 बजे	एक	200-00
7.	वसंतोत्सव	प्रतिदिन	दोपहर 2-30 से 3-00 बजे	एक	300-00
8.	सहस्रदीपालंकार सेवा	प्रतिदिन	सायं 5-00 से 5-30 बजे	एक	200-00
	साप्ताहिक सेवाएँ				
9.	विशेष पूजा	सोमवार	सुबह 6-00 से 6-30 बजे	एक	600-00
10.	अष्टदल पादपद्माराधना	मंगलवार	सुबह 5-00 से 5-30 बजे	एक	1,250-00
11.	सहस्रकलशाभिषेक	बुधवार	सुबह 5-00 से 5-30 बजे	एक	850-00
12.	तिरुप्पावडा सेवा	गुरुवार	सुबह 5-00 से 5-30 बजे	एक	850-00
13.	वस्त्रालंकार सेवा	शुक्रवार	प्रातः 3-00 से 4-00 बजे	दो (पती व पत्नी)	12,250-00
अ)	पूराभिषेक(१२ वर्ष से कम बच्चों को प्रवेश नहीं है)	शुक्रवार	प्रातः 3-00 से 4-00 बजे	एक	750-00
14.	निजपाद दर्शन	शुक्रवार	सुबह 4-30 से 5-30 बजे	एक	200-00
	वार्षिक/सामयिक सेवाएँ				
15.	प्लवोत्सव	फरवरी/मार्च	सायं 6-00 से 7-00 बजे	एक	500-00
16.	वसंतोत्सव	मार्च/अप्रैल	दोपहर 1-00 से 2-00 बजे	एक	300-00
17.	श्रीपद्मावती परिणय	मई	सायं 4-00 से 4-30 बजे	एक	1,000-00
18.	अभिदेयक अभिषेक	जून	सुबह 8-00 बजे	एक	400-00
19.	पुष्पपल्लकी	जुलाई	सायं 6-30 से 7-30 बजे	एक	200-00
20.	पवित्रोत्सव	अगस्त	सुबह 8-00 से 9-00 बजे	एक	2,500-00
21.	पुष्पयाग	नवंबर	सुबह 8-00 से 9-00 बजे	एक	700-00
22.	कोयिलाल्वार तिरुमंजन	वर्ष में चार बार	सुबह 10-00 से 11-00 बजे	एक	300-00

वाट्स याप : 9399399399
टोल फ्री : 1800-4254141,
1800-425333333
इ-मेइल : helpdesk@tirumala.org

उपर्युक्त सेवाओं के लिए केवल आनलइन से टिकटों का आरक्षण करवायें। अन्य विवरण के लिए ति.ति.दे. वेबसैटः www.tirumala.org/ www.ttdsevaonline.com के द्वारा संपर्क करें।

काल सेंटर नंः 0877-2233333, 2277777.

सप्तगिरि

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं
ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन,
वेङ्कटेश समो देवो
न भूतो न भविष्यति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष-४९ मार्च-२०१९ अंक-१०

विषयसूची

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
महाशिवरात्रि पर्व	श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	07
तिरुक्कचिनम्बि (कांचीपूर्ण स्वामीजी)	श्रीमती रेखा विजय लड्डा	09
होली उत्सव और वसंत की आगमन	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	11
श्री महालक्ष्मी	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	14
श्री वेदान्ति स्वामीजी	श्रीमती नीता गोकुलजी दरक	18
नागलापुरम् - श्री वेदनारायण स्वामी मंदिर	डॉ.के.एम.भवानी	23
काम दहन	श्री वेमुनूरि राजमौलि	25
भागवत कथा सागर - वैकुण्ठ के द्वारपालों को शाप	श्री अमोघ गौराँग दास	31
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि तापडिया	34
बुद्धि नाश से विनाश	श्री अमोघ गौराँग दास	36
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	38
शिव-धनुष तोड़ने का मतलब	श्रीमती वी.केदारम्मा	39
'धर्म' जीवन की शक्ति है	श्री अंकुश्री	40
तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी	डॉ.जे.सुजाता	43
सप्तगिरि की चोटियों में महाशिवरात्रि पर्व	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	46
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	53

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, बी.ए., बी.एड्.,
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

श्री पी.शिवप्रसाद,
सेवानिवृत्त चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

मुखचित्र
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का प्लवोत्सव, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ
श्री लक्ष्मीदेवी

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त किये विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
– प्रधान संपादक

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, 2264360.

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु. 60-00
एक प्रति .. रु. 05-00
विदेशियों को वार्षिक चंदा .. रु. 850-00

संपादकीय

हरहरमहादेवशंभो...

'दारिद्र्य दुःख दहनाय नमःशिवाय' - विश्व जीवन के प्रक्रियाओं का पर्यवेक्षण करने के बाद विद्वानों का यह मानना है कि 'परमात्मा' एक ही है। हिन्दुवों का विश्वास है कि सृष्टि, स्थिति, लयाओं को चलानेवाले तथा देखनेवाले ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर ही है। अनंत विश्व का आधारभूत माने जानेवाले 'परमात्मा' स्थिति के अनुसार कई रूपों में दिखाई देते हैं। विविध आकारों में भगवान की प्रार्थना करना, हम भारतीयों का अनादि काल से एक रिवाज-सा रहा है। हमारा प्रगाढ़ विश्वास है कि आवश्यकता के अनुसार श्रीमन्नारायण कई रूप धारण करते हैं तथा विश्वभर में व्यापित होते हैं।

शिवजी को 'लयकारक' कहते हैं, फिर भी शिव तत्त्व लौकिक सादगी का तथा आध्यात्मिक सुसंपन्नता का प्रतीक है। वे अभयकारक हैं, यह शतप्रतिशत सत्य है। जो कोई भी किसी इच्छा की मांगकी तो, बिना सोचे, उसे एकाएक दे देनेवाला 'भोलाशंकर' है। जलाभिषेक करने मात्र से संतुष्ट होकर, भक्तों के इच्छावों को पूरा करते हैं। पूरे मन से उनकी प्रार्थना करने पर, 'मृत्युंजयत्व' भी प्रदान करते हैं।

हम पामर लोगों को यह धर्म संदेह होती है कि विद्वान लोग 'शिव' को 'लयाधिपति' क्यों बनाये, जन्म से काम, क्रोध, लोभ जैसे अरिषड्वर्ग के दुर्गुण तथा दुर्व्यसनों के फंदे में फंसकर छटपटाते हुए मानव के अन्दर बसे पापों को तथा दुर्गुणों को भगवान शिव 'लय' करते हैं, इसीलिए वे 'गरलकंठ' बनकर, अमृत प्रदान करते है। इसमें निहित अर्थ-परमार्थ शायद यही हैं।

कब्रिस्तान में वास करते हुए, गजत्वचा पहन कर, आदिभिक्षु के रूप में दिखाई देने में उनका एक उत्कृष्ट संदेश छिपी हुई है। हर आदमी 'साधु' ही है। लौकिक सुख सुविधावों के लिए विनती करने की स्थिति से ऊपर उठकर, उस परमात्मा से अनुरोध करनेवाली भिक्षा 'मृत्युंजयत्व' है - वहीं मोक्ष मार्ग है। जिन्दगी को सादगी से जीने का संकेत ही 'गजत्वचा' धारण करना।

त्योहारों के समय भगवान की पूजा करना, रिवाजों का पालन करना हलांकि अच्छा संप्रदाय होने पर भी, उन त्योहारों के पीछे छिपे भगवान के पवित्र संदेश को समझकर, उसके उपर्युक्त जिन्दगी को बदलना और भी अभिलषणीय है। मानव उस स्तर पर पहुँचने से 'महर्षि' बन जाता है। यदि भगवान पंचमुखी हो, परमशिव हो या 'पंकजनाभ' हो, भक्तों से यही उम्मीद रखता है।

मार्च ४ को 'महाशिवरात्रि' का पर्वदिन है। इस पावन पर्व दिन पर परमेश्वर का महाभिषेक करने के साथ-साथ हम भी अपने आप को 'नामाभिषेक' से पवित्र बनाएँ। अभी तक जाने अनजाने में हमसे हुए पापों का तथा मन की अशुद्धियों को प्रक्षालन करके, उस 'परमशिव' के निकट पहुँचे।

तिरुपति के श्री कपिलेश्वर स्वामी के मंदिर में 'महाशिवरात्रि' के उत्सव तथा श्री कपिलेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सवों को तिरुमल तिरुपति देवस्थान अत्यंत धूमधाम से मनाती है। विभिन्न प्रकार के वाहनों पर स्वामीजी का जुलूस निकलती है और सभी भक्तजनों को अनुग्रह प्रदान करती है। 'महाशिवरात्रि' के दिन ''विशिष्ट पूजावों'' का आयोजन किया जाता है।

श्री कपिलेश्वर स्वामी का दर्शन करके, हम अपने के अंदर अशुद्धियों को धोकर, पवित्र हो जायें। ये 'भूतपति' हमारे अंदर की 'अज्ञानांधकार' को 'लय' बनाकर, 'ज्ञान' को प्रदान करें, इसी इच्छा से प्रार्थना करें।

'तन्मे मनःशिव संकल्पमस्तु'

महाशिवरात्रि पर्व

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

शिवरात्रि (०४.०३.२०१९) के संदर्भ में...

पशुनां पतिं पापनाशं परेशंगजेन्द्रस्य कुतिंवसानः वरेण्यम्।
जटा जूट मध्ये स्फूरदांगवारि महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि।।

प्राणियों के रक्षक है, हमारे समस्त पापों के हरनेवाला है, परम परमेश्वर जिसने गजराज के चर्म धारण किया है, जिसके शिर पर जटा में गंगाजी उपस्थित है ऐसे देवदेव भगवान शिव का हम स्मरण करते है।

महादेवजी का पवित्र त्योहार में शिवरात्रि का महत्व अधिक है। शिवरात्रि पर्व हम आराधक को मोक्ष प्रदान करते है, पापमुक्त करते है। और ज्ञान भी प्रदान करते है। शास्त्रकारों भी शिवरात्रि पर्व को बहुत पवित्र बताया है। हमारे मन में प्रश्न बनता है की असल में शिवरात्रि पर्व क्या है? सामान्य जन शिवरात्रि को भगवान शिव का जन्मदिन मानते है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नही है? चलो हम शिवरात्रि पर्व के बारे में कुछ अनुसंधान करे।

महाशिवरात्रि का प्राथमिक परिचय

भगवान सदाशिव की पूजा आराधना और पर्व में महाशिवरात्रि महान पवित्र और विशिष्ट पर्व माना गया है। शैव संप्रदाय में अनेक विध व्रत और पर्व है, जिसमें सोमवार व्रत, तेरह और चौदही तिथि का व्रत, एकादशी व्रत, महाशिवरात्रि व्रत। शैव संबंधित अनेक व्रतों में प्रमुख व्रत महाशिवरात्रि व्रत है। अनादिकाल से महाशिवरात्रि पर्व में महापूजा, उपवास और जागरण का अधिक महत्व रहा है। हमारे पुराणों में शिवरात्रि पर्व उपवास और जागरण के बारे में अनेक कथा मिलती है। शिवरात्रि पर्व में रात्रि के चार प्रहर में शिवजी का अभिषेक करने से महापूजा करने से और रात्रि जागरण करने से पापों का हरण होता है और शिवरात्रि व्रत आचरण साधकों को भक्ति और मुक्ति मिलती है।

महाशिवरात्रि व्रत के संबंध में अनेक मत

लिंग पुराण में बताया है कि, हर महीने की वद १४ ही शिवरात्रि है। क्योंकि महामास की कृष्णपक्ष १४ की मध्यरात्रि में सदाशिव, करोडसूर्य के तेज समान लिंग स्वरूप में आविर्भूत हुये थे। दिव्य तेजोमय स्वरूप में लिंग में प्रवेश किया वही पवित्र तिथि महाशिवरात्रि के नाम से प्रचलित हुयी।

दूसरी कथा ऐसी है कि, देव और दानव के बीच में महासंग्राम हुआ, देव और दानव ने मिलाके समुद्रमंथन किया। मंथन करने से सबसे पहले हलाहल विष उत्पन्न हुआ इसके बाद में चौदह रत्न प्रगट हुए। ये जो विष प्रगट हुआ, ये विष सृष्टि का नाश करने वाला था। इसी वक्त देवतागण शिवजी के पास गये और प्रार्थना की। महादेवजी ने सृष्टि के कल्याण के लिये ये हलाहल विष अपने कंठ में समालिया। (इसीलिये नीलकंठ भी कहलाया) धारण करने से सदाशिव मूर्छित हुए। सदाशिव को स्वस्थ करने के लिये इस मध्यरात्रि के समय में माँ पार्वती

और देवतागण सभी ने अनेक विध स्तुति और प्रार्थना की। अंत में स्तुति और प्रार्थना से सदाशिव स्वस्थ हुआ। इस समय माँ पार्वती और देवतागण को अपनी सेवा में उपस्थित देखकर सदाशिव बहुत प्रसन्न हुआ। सब पर प्रसन्न होकर सदाशिव बोला ''महा वद १४ के पवित्र दिन कोई भी भक्त और उपासक श्रद्धा और भक्ति के साथ उपवास और जागरण करेगा, रात्रि के चार प्रहर मेरी महापूजा अभिषेक करेगा उसे ''सायुज्य'' मुक्ति प्रदान करूँगा।'' और हर मास की वद १४ तिथि शिवरात्रि के नामसे प्रचलित होगी। इसलिए शिवरात्रि पर्व बहुत बडा पवित्र पर्व माना गया।

मार्कण्डेय ऋषि ने सदाशिव को प्रसन्न करने हेतु बहुत तपश्चर्या की। तप से प्रसन्न होकर सदाशिव कालाग्नी के रूप में प्रगट हुआ वही पवित्र दिन शिवरात्रि कहलाया। विशेष में हम ये भी कह सकते है कि जीव के पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेंद्रिय, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार जैसे चौदह स्थान के ऊपर नित्य अज्ञानता का साम्राज्य होता है। हमारे ये चौदह स्थानों को पवित्र करने का शुभ अवसर ही शिवरात्रि है।

महाशिवरात्रि पर्व की प्रधान बाबते

महाशिवरात्रि पर्व में प्रधान तीन बाबत में उपवास रात्रि महापूजा और रात्रि जागरण का अधिक महत्व है। उपवास का सर्व प्रथम अर्थ है निराहार रहना। हम तत्त्व की दृष्टी से देखे तो मन और शरीर दोनों को, विचारों से रोगों से विकृति से दूर रख के मन और शरीर शिव को समर्पित कर देना है। ये तात्त्विक उपवास करने से जीव की स्थिति ''शिवोहं'' बनती है। शिवोहं स्थिति में जीवात्मा का संबंध परमात्मा से हो जाता है शिवरात्रि के पर्व में पूरी श्रद्धा से उपासना करने के बाद जीवात्मा परमात्मा से अत्यंत जुड जाता है, ऐसी परिस्थिति में जब जीवात्मा की उपासना तीव्र होती है तब जीवात्मा चौदह से लेकर अमावस्या तक में ''शिवैक्यं'' स्थिति प्राप्त करता है। शिवरात्रि की मध्यरात्रि का जो काल है वे लिंगोद्भव काल कहा जाता है ये मध्यरात्रि में शिव उपासना बहुत फलदायी होती है। इस पर्व में जीवात्मा - शिव की उपासना करके अद्वैत अनुभूति का अनुभव करता है। जीवात्मा की अद्वैत अनुभूति ही शिवरात्रि की फलश्रुति है।

साल भर में शिवरात्रि आचरण

साल भर में पाँच बार शिवरात्रि पर्व का आचरण करने का विधान है।

१. नित्य शिवरात्रि - नित्य हर दिन शिव की आराधना ही शिवरात्रि है। **२. पक्ष शिवरात्रि -** शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की चौदही तिथि शिवरात्रि है। ये तिथि उपासना करने का विधान है। **३. मास शिवरात्रि -** हर मास की कृष्ण पक्ष की चौदही तिथि मास शिवरात्रि है। **४. महाशिवरात्रि -** महा मास की कृष्ण चौदही तिथि महाशिवरात्रि पर्व में उपवास महापूजा, जागरण करने का विधान है। **५. योग शिवरात्रि -** योगी - योगनिद्रा में सिर्फ मन से ही शिव से जूड जाते है मन से ही उपासना और साधना करते है।

निशिथकाल पूजा - चार प्रहार पूजा

चार प्रहर की पूजा, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को परिशुद्ध करता है। देवियों की पूजा रात्रि में होती है और देवता की पूजा दिन में होती है। शिवरात्रि एक ऐसा पर्व है कि ये मध्यरात्रि में शिव की पूजा - उपासना की जाती है। प्रथम प्रहर में ऋग्वेद के मंत्रों से अभिषेक और कमल के फूलों से पूजा करने का विधान है। दूसरे प्रहर में यजुर्वेद मंत्र से दधी अभिषेक और तुलसी अर्चना करने का विधान है। तीसरे प्रहर में सामवेद मंत्रों से घृताभिषेक और बिल्वपत्र से पूजा करनी चाहिए और चौथे प्रहर में अथर्ववेद मंत्रों से मधु अभिषेक करने का बहुत महत्व है। इसी तरह महाशिवरात्रि पर्व में चार प्रहर पूजा करने से मानव जन्म मृत्यु के चक्कर से विमुक्त होकर शिव सायुज्य प्राप्त करता है।

तो आइये महाशिवरात्रि पर्व में उपवास-महापूजा और जागरण करके हमारे मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार और साथ में पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेंद्रिय मिल के चौदह स्थान को परिशुद्ध करे और ज्ञान प्राप्त करे। सत्व रजस और तमस गुणों का त्याग करके त्रिगुणातीत बनके शिव रूप बनकर सायुज्य मुक्ति को हम प्राप्त करें।

यही शिवरात्रि पर्व का तात्पर्य है।

जय महादेव

तिरुक्कच्चिनम्बि
(कांचीपूर्ण स्वामीजी)

- श्रीमती रेखा विजय लड्डा

अवतार तनियन

कुम्भे मृगशिरो जात श्री काञ्ची-पूर्णमाश्रये।
षटसूक्तं यतिराजाय यनमुखाद-वरदोवदता।।

जन्मनक्षत्र - मृगशिर नक्षत्र

अवतार स्थल - पूविरुन्तवल्लि

आचार्य - श्री आळवन्दार

परमपद प्राप्त स्थल - पूविरुन्तवल्लि

ग्रन्थ रचना सूची - देवराजाष्टकम्

तिरुक्कच्चि स्वामीजी कांचीपूर्ण स्वामीजी के नाम से प्रसिद्ध है। कांचीपुरी में शबरी के अंश से चतुर्थवर्ण में उत्पन्न कांचीपूर्ण स्वामीजी थे। वे एक वैश्य परिवार से थे, इनके पिताजी का नाम वीरराघवन, माताजी का नाम कमलम्मा था। इनके चार पुत्रों में कांचीपूर्ण स्वामीजी सबसे छोटे थे। इनका जन्म पूविरुन्तवल्लि में हुआ था। जो कि वर्तमान में चेन्नई में है।

शात्तुमोरा (१४.३.२०१९) के संदर्भ में...

कहते है कि अपने पिता से प्राप्त संपत्ति इन्होंने भगवान की सेवा में लगा दी थी। वैराग्य जागने से इन्होंने श्रीरंगम् जाकर आळवन्दार स्वामीजी से दीक्षा लेकर भगवान श्रीरंगनाथजी की पंखी से हवा देने की सेवा करना प्रारंभ की।

वरदराज भगवान कि विशेष कृपा

एक बार रामानुजाचार्य स्वामीजी को एक घने जंगल में व्याध दम्पति के रूप में भगवान मिले। व्याध दम्पति को देखकर रामानुजाचार्य ने पूछा आप कौन है? कैसे इधर आये? कहा जा रहे है? भगवान रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर व्याध वेषधारी भगवान बोले में सत्यवती क्षेत्र जा रहा हूँ, आप कैसे इस निर्जन हिंसक पशुओं से भरे हुए घनघोर जंगल में घूम रहे है? तब रामानुजाचार्य बोले में अपने गुरु के साथ गंगा स्नानार्थ प्रयाग जा रहा था। किंतु कुछ कारण वश यहाँ रुक गया। अब कांची जाना चाहता हूँ। किन्तु में अकेला और असहाय हूँ। मेरा कोई साथी नही है। भगवान रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर करुणा सागर भगवान ने उन्हें अपने साथ लेकर कांची के लिए प्रस्थान किया। उसी रात को रामानुजाचार्य के साथ जब व्याध दम्पति सो रहे थे, तब व्याध पत्नी को प्यास लगी। श्री रामानुजाचार्य बोले सम्प्रति में आप लोगों को जल प्रदान करने में मैं अक्षम हूँ। किन्तु प्रातःकाल होते ही मैं आप लोगों को उत्तम जल प्रदान करूँगा। सवेरा होते ही व्याधरूपधारी भगवान बोले सन्निक में ही जल है। अंजलि में भरकर हमे आप जल दे। तब रामानुजाचार्य तीन अंजलि जल देकर जब चौथीबार जल उठाये तो व्याध दम्पति वहाँ नही थे। और तभी रामानुजाचार्य कांचीपुरी के निकट पहुँच गए थे। तब आश्चर्य चकित श्री रामानुजाचार्य ने अनुमान लगाया कि यह भगवान वरदराज का ही प्रभाव

है। फिर रामानुजाचार्य ने यह वृत्तान्त कांचीपूर्ण स्वामीजी को सुनाया तब वे बोले भगवान वरदराज की आप पर अत्यंत कृपा है इसलिए उन्होंने आपको आपत्ति से बचाया है और आपके हाथों से जल पीने की इच्छा व्यक्त की। इसलिए आप नित्य ही उस कुएँ से जल लाकर भगवान वरदराजजी को समर्पित किया करे।

उनकी आज्ञानुसार रामानुजाचार्य प्रतिदिन उसी कुएँ (शालकूप) से जल लाकर वरदराज भगवान को समर्पित करने लगे और पंखी से हवा देने की सेवा करने लगे। सेवा के समय कांचीपूर्ण स्वामीजी भगवान वरदराजजी से वार्तालाप करते थे। शालकूप के दर्शन आज भी वहाँ होते हैं।

तरीप्रसाद का महत्व

एक बार रामानुजाचार्य कांचीपूर्ण स्वामीजी के तरीप्रसाद की अभिलाषा से उन्हे अपने यहाँ प्रसाद पाने के लिये आग्रह किये। कांचीपूर्ण स्वामीजी ने निमंत्रण स्वीकार किया। रामानुजाचार्य घर पर नही थे। तभी कांचीपूर्ण स्वामीजी आये और रामानुजाचार्य की पत्नी श्रीमती रक्षकाम्बा को विनंती करके जल्दी प्रसाद पाकर चले गये।

श्रीमती रक्षकाम्बा बचा हुवा भोजन नौकर को देकर पुनः स्नान करके रामानुजाचार्य के लिए दूसरा भोजन बनाने लगी। रामानुजाचार्य आये और उन्हें पता चला की रक्षकाम्बा ने कांचीपूर्ण स्वामीजी के शूद्रवर्ण को देखकर ऐसा किया तो वे अति दुःखी हुवे। क्योंकि उन्हें कांचीपूर्ण स्वामीजी का तरीप्रसाद नही मिला। उस दिन से रामानुजाचार्य ने अपनी पत्नी का त्याग कर दिया।

रामानुजाचार्य कांचीपूर्ण स्वामीजी के पास जाकर निवेदन किये की वे उन्हें पंचसंस्कारित करे याने अपना शिष्य बना ले। जिसे कांचीपूर्ण स्वामीजी ने अपने वर्ण के कारण अस्वीकार किया।

तब रामानुजाचार्य ने कांचीपूर्ण स्वामीजी को ४ प्रश्न पूछे-

१. उज्ञीवन के लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है?

२. अन्तिम समय में भगवत् स्मरण आवश्यक है की नहीं?

३. मोक्ष प्राप्ति कब होती है?

४. मैं किन आचार्य का समाश्रयण करूँ?

कांचीपूर्ण स्वामीजी ने एकान्त में पंखी सेवा करते हुये वरादराज भगवान से ये प्रश्न पूछने पर भगवान ने उत्तर दिया-

१. मैं ही परम तत्त्व और जगत के कारणों का कारण हूँ।

२. जीव और ईश्वर में भेद सिद्ध है।

३. मोक्ष के लिये भगवत् शरणागति सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

४. मुझे अपने (शरणागत) भक्तों से अन्तिम स्मृति की अपेक्षा नही।

५. देह त्याग करने पर मैं अपने (शरणागत)भक्तों को परमपद देता ही हूँ।

६. श्री रामानुजाचार्य श्री महापूर्ण स्वामीजी का समाश्रयण करें।

कांचीपूर्ण स्वामीजी के मुख से श्री वरदराज भगवान की छः वाक्य आज्ञा सुनकर प्रसन्न रामानुजाचार्य तुरन्त श्री महापूर्णाचार्य स्वामीजी द्वारा पंचसंस्कार ग्रहण करने की इच्छा से श्रीरंगम् के लिये प्रयाण किये।

होली उत्सव और वसंत की आगमन

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

हमारे भारतवर्ष में अनेक प्रकार की उत्सव और त्यौहार मनाये जाते है। कोई राष्ट्रीय त्यौहार है, तो कोई सामाजिक, तो कोई धार्मिक। हमारे कई सारे धार्मिक त्यौहार के साथ हमारा धर्म, हमारी संस्कृति, हमारा संप्रदाय जुडा हुआ है। ऐसा ही एक त्यौहार हम सब मनाने जा रहे है, वो है ''होली उत्सव'' होली को 'फाग उत्सव' भी कहते है।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के पवित्र दिन होली उत्सव पूरे भारत में मनाते है, खास करके राजस्थान में मारवाडी लोग बहुत धूमधाम से ये त्यौहार मनाते है, उत्तर भारत में व्रज, गोकुल, मथुरा, वृंदावन सब जगह ये फाग उत्सव बडी धूमधाम से मनाने की प्रणाली है। होली के त्यौहार में मानव मुक्त मन से विहार करते है। सभ्यता का अति कठिन बंधनों को हटाकर मानव इस त्यौहार बहुत आनंद और उत्साह से मनाते है।

होली उत्सव अर्थात् वसंत का आगमन...

ये सृष्टि में हम सब मानव लोग प्रकृति और वसंत का हर्षभेर आगमन करते है। इस समय में पूरी सृष्टि में वसंत का वैभव अगाध होता है बहुत मनोरम होता है, प्रकृति चारे ओर से खीली हुई नजर आती है, मानो के हमारी पृथ्वी ने हरियाली चादर औढ ली है।

होली उत्सव में सदाशिव का उत्तम संदेश

सदाशिव हम मानव को ये सीख दे रहे है की इस मस्तीभरी वसंत के वैभव में हमें संयम को नही भूलना है। इस हकीकत पौराणिक घटना के साथ जुडी हुई है।

वसंत के वैभव में कामदेवजी ने सदाशिव शंभु के ऊपर हमला किया, इस वक्त सदाशिव ने कामदेव की कामवासना को जला दिया और कामदेव की प्रवृत्ति का मूल से नाश किया। इस घटना से सदाशिव हम मानव का यह संदेश दे रहा है कि इस वसंत के वैभव में संयम को बनाये रखे, हमारे मन को प्रफुल्लित कर के मुक्त मन से होली का उत्सव मनाये।

होली उत्सव की पौराणिक कथा

यह एक ऐतिहासिक घटना प्रसंग है। हिरण्यकश्यप बहुत घमंडी असुर था। सब जगह पृथ्वी पर चारों ओर अपना ही महत्व फैला के घूमता फीरता था। वो समझता था की हम पूरी सृष्टि का राजा है। सब लोग मेरी ही पूजा आराधना करे और मेरा ही नाम ले, मैं ही इस सृष्टि का भगवान हूँ, ऐसी गंदी और घमंडी सोच के साथ शासन कर रहा था।

इस हिरण्यकश्यप असुर के घर में एक पवित्र बालक ने जन्म लिया। समय पर उसका नाम प्रह्लाद रखा गया। प्रह्लाद भगवान नारायण का ही अंश था। ये पवित्र बालक जन्म से ही नारायण का मंत्र जप करता था। पुत्र प्रह्लाद की धर्म प्रति आस्था देखकर पिता हिरण्यकश्यप बहुत गुस्से हुआ, वो अपना साम्राज्य अखंड रखने के लिए कटिबद्ध था। पिता अपने पुत्र प्रह्लाद को नारायण नाम से दूर करने की चेष्टा करता रहा। अनेकानेक प्रयत्न किया फिर भी पुत्र प्रह्लाद का नारायण से दूर करने में असमर्थ रहा। अंत में पुत्र प्रह्लाद को मृत्युदंड देने के लिए तैयार हो गया, तब उसने सोचा की प्रह्लाद को अग्नि में जलाकर उसका अंत कर दिया जाय। असुर हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को ब्रह्मा जी का पवित्र वरदान था, कि ''अग्नि कभी होलिका को स्पर्श नही कर सकती।'' इस का दुरुपयोग करने की सोच असुर को आयी। उसने होलिका को आज्ञा दी की तुम ये बालक प्रह्लाद को अपने गोद में बिठाकर अग्नि में बैठजा'' और बालक प्रह्लाद को मृत्युदंड दिया जाय।

बहन होलिका सदवृत्ति वाली थी, प्रह्लाद को बहुत प्यार करती थी, वो अपने वरदान से प्रह्लाद को बचा लेना चाहती थी। भाई की आज्ञा के अनुसार प्रह्लाद को अपने गोद में बिठाकर बडी चित्ता पर जा बेठी। पुत्र प्रह्लाद संपूर्ण निर्भय था।

वो आँख बंध करके भगवान नारायण के अष्टाक्षर मंत्र का जप कर रहे थे। इस कठिन परिस्थिति में भी प्रह्लाद ने अपने इष्ट भगवान को नही भूला, प्रभु नाम स्मरण के कारण प्रभु ने प्रह्लाद को अग्नि से बचा लिया, और होलिका के साथ प्रह्लाद था इसलिये उसका वरदान फोक बन गया और होलिका जल के भस्म हो गई।

इस का तात्पर्य ये हुआ की कोई भी प्राणी, मनुष्य सतत प्रभु को अपने पास रखते है, अपने मन में रखते है, अपने दिल में रखते है, प्रभु सदा उसकी रक्षा करता है, और उसका अहित कभी नही होता।

१. होली के अवसर पर होलिका और अग्निदेव का पूजन

होली के अवसर पर पूर्णिमा की शाम को घर के बाहर, महोल्ले और गलियों के बाहर अग्नि प्रज्वलित करते है। इस वक्त सभी मानव लोग अग्निदेव और होली का विशेष पूजन करते है। सत्यनिष्ठ, प्रभुनिष्ठ, सद्वृत्तिवाले प्रह्लाद को अग्निदेव ने अग्नि से प्रह्लाद को बचा लिया और सद्वृत्तिवाली होलिका ने अपनी जिंदगी दाव पे लगा दी और प्रह्लाद को बचा लिया। इसका मान-सम्मान रख के, हम सब लोग अग्निदेव और होलिका को कुंकुम, अक्षत, खजूर

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामि पुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।

से पूजा करते है। अबिर, गुलाल का छँटकाव भी करते है। होलिका की आत्मशांति के लिए अग्नि की चारों ओर जलधारा करते है। विशेष में खजूर, दाल का प्रसाद करते है।

होली उत्सव के साथ-साथ अनेकविध उत्सव

१. वसंत के वैभव में कामदेव संयम को भूल गया और शिवजी के प्रति अपना जादु फैलाने की कोशिश की, तब शिवजी ने उसकी कामांध प्रवृत्ति का नाश किया और कामवासना का दहन किया, वही उत्सव का दिन फागुन शुक्ल पूर्णिमा है।

२. व्रजभूमि में ये उत्सव फाग उत्सव के नाम से प्रचलित है। खास करके वैष्णवजन होलिका दहन की जगह पूतना दहन करते है, व्रज के सारे बालक लोग पूतना का पूतला बना के जलाते है और पूर्णिमा के दिन आनंद और उत्साह से रंगों से खेलते है।

३. भागवत पुराणों में कहा है कि, भगवान श्रीकृष्ण ने सोचते थे की राधा बहुत सुंदर और गौर वर्णवाली है, मैं तो श्यामवर्ण हूँ, हमारे दोनों के बीच बहुत काफी अंतर है। श्याम ने, माता यशोदा से कहाँ की मैया, राधा बहुत गोरी है, मैं श्याम हूँ, तो राधा मुझे चाहेगी, प्रेम करेगी? तब यशोदा ने कहा की कन्हैया तू राधा का मुह अबीर गुलाल से रगडकर श्याम बना दे। तब श्रीकृष्ण ने यशोदा की बात पर राधा के चेहरे पर अबीर गुलाल रगड लिया, तब से व्रजभूमि में यह पवित्र उत्सव की प्रथम शुरुआत हुई। यही दिन लोग रंगोत्सव मनाते है।

राधा और श्याम के बीच रंगोत्सव में जो संवाद हुआ उसका सुंदर पद अनंतप्रसादजी ने लिखा है।

होरी खेले सहु ब्रीजनारी, स्यामा सोहे कुंजबिहारी।
सुंदर ब्रीदावन यमुना की ऋतु वसंत सुखकारी।।
सुंदर सखी, सुंदर सामग्री, सुंदर श्याम मुरारी।
श्यामे संध्य सखी जीतना स्वरूप लिया कामारी।।
सभी सखी से खूंची सामग्री स्यामा करी चोट भारी।
खेल जाम्यो चित्तहारी... होरी खेले ब्रीजनारी।।

४. फागुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन श्रीवैकुंठाधिपति श्रीहरि विष्णु पत्नी श्री लक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव हुआ था। इस वक्त स्वर्गाधिपति इन्द्र भी अपना पूर्व वैभव को प्राप्त हुए थे।

होली उत्सव का शुभ संदेश

होली के इस पवित्र अवसर पर फागुन के विविध रंगों से हमारा जीवन रंगीन बनाये, वसंत के वैभव में संयम के साथ प्रकृति का आनंद ले और सत्यनिष्ठ, प्रभुनिष्ठ, सद्वृत्ति की रक्षा करके असद्वृत्ति, ईर्ष्या को होली की अग्नि में जलाकर भस्म कर दे यही शुभ संदेश के साथ सभी वाचक वृंद को होली की शुभकामनाएँ।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

पाठकों केलिए सूचना

हर महीने सप्तगिरि मासिक पत्रिका आपको समय पर नहीं मिलता, तो आप प्रधान संपादक कार्यालय के कार्यरत समय में निम्न लिखित दूरभाष से संपर्क कर सकते हैं। पत्रिका तुरंत भेजा जायेगा।

आप फोन पर आपका चंदा नंबर, पता, अपने प्रांत का पोस्टल पिन कोड, मोबाइल नंबर सही ढंग से बताइये।

प्रधान संपादक कार्यालय का दूरभाष : ०८७७-२२६४५४३.

श्री महालक्ष्मी

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन लक्ष्मीदेवी जन्मदिन मनाते हैं। पुराणों के अनुसार लक्ष्मीदेवी दिवाली पर्व में जन्म होने का कथन है। पद्ममुखी पद्मासन में अमूल्य आभरणों को धारणकर एक हाथ में सुवर्ण कलश और दूसरे में अभय मुद्रा के साथ शोभायमान से जन्म लिया है। सभी संपदाओं के अधिष्ठात्री होने से 'श्री' नाम से प्रसिद्ध है। क्षीरसागर मंथन में लक्ष्मी देवी का आविर्भाव हुआ। सभी देवतागण अमृत को पाने के लिए क्षीरसागर मंथन किया। वासुकी को रस्सी बनाकर एक ओर देवतागण और दूसरी ओर राक्षसगण समुद्र का मंथन किया। समुद्र मंथन से ऐरावत, कल्पवृक्ष, कामधेनु, धन्वन्तरी, पारिजात और अंत में लक्ष्मीदेवी बाहर आयी। श्री महाविष्णु ने मोहिनी के रूप में देवदानव को शांत करके देवताओं को अमृत पिलाया। कृतज्ञता भाव से देवताओं ने लक्ष्मीदेवी को विष्णु भगवान को दिये थे। विष्णु ने लक्ष्मीदेवी से विवाह किये थे।

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमयि नारायणि नमोस्तुते।।

कल्याणरूपं च शिवां शिवप्रदां त्वां सर्वयोनिं शरणं प्रपद्ये।
सर्वाश्रयां सर्व जगन्निवासां श्रीमन्महालक्ष्मीमनादि देवीं
शक्ति स्वरूपां च शिव स्वरूपां त्वां सर्वयोनिं शरणं प्रपद्ये।

श्री वेंकेटश्वर के पटरानी, श्रीनिवास के वक्षःस्थल रानी अलमेलुमंगा की दिव्यरूप चिन्नन्ना इस प्रकार कीर्तन किया है-

अलमेलुमंग नीवभिनवरूपं
जलजाक्षु कन्नुलकु चवुलिच्चेवम्मा
गरुडाचलाधीशु घनवृक्षमुन नुंडि
परमानन्द संभरितवै
नेरतनमुलु चूपि निरंतर नाथुनि
हरुषिचंग जेसिति गदम्मा।

अलमेलुमंगा श्रीनिवास के हृदय निवासिनी है। पद्मावती के हाथ से ही सभी जन्तुओं के जीवन चलती है। परम योगिगण सभी सदा लक्ष्मी के स्तुति करते है। मानव के मलिन और दूर करके सुवाक्प्रदान करती है।

दर्शनीया दृश्यादृश्या स्पृश्या सेव्या वराङ्गना।
भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्र शयनाशनां।।
आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी।
श्रेयस्करी शुभफला परमैश्वर्य भूतिदा।।

अम्मा! अलमेलुमंगा! आप श्रीनिवास के हृदय पद्म में मुग्धमनोहर रूप से व्यूहलक्ष्मी दयार्द्र स्वरूपिणी नाम से प्रख्यात है। यही माँ वेंकटाचल क्षेत्र में स्थित व्यूहलक्ष्मी तिरुचानूरु क्षेत्र में अर्चामूर्ति स्वरूप से पद्मावती नाम से पूजाएँ लेती है।

श्री लक्ष्मी जयंती के संदर्भ में...

पद्म पत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः।
पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः।

वैकुण्ठ में स्थित महालक्ष्मी सभी लोकों में विभिन्न नामों से भासित होती है। गृह में गृहलक्ष्मी नाम से, महाराज के समीप राज्यलक्ष्मी नाम से नागलोक में, नागलक्ष्मी नाम से स्वर्ग लोक में स्वर्गलक्ष्मी नाम से लक्ष्मी अर्चना लेती है।

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीः या लक्ष्मीः क्षीरसागरे
स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राज्यलक्ष्मीः नृपालये
गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता
सुरभिस्सागरे जाता दक्षिणा यज्ञकामिनी
अदितिर्देवमाता त्वां कमले कमलालये।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कन्या दाने स्वधा स्मृता।
पद्मावती पद्मवने मालती मालती वने
कुंददंता कुंदवने सुशीला केतकी वने
कदंब माला त्वं देवी कदंब काननेपि च
राज्यलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मी गृहे गृहे।।

सर्वोन्नत माता महालक्ष्मी प्रदान और विशिष्ट 'छः' गुणों से भासित होती है। परमपुरुष श्रीमन्नारायण को नही छोडती है। इससे अनपायिनी नाम से प्रख्यात है। इस कारण से भक्तों के प्रार्थनों को सुनकर भगवान से शीघ्र रूप से निवेदन कर अनुग्रह केलिए प्रेरित करती है। हमारे जीवन में वृद्धि, ऐश्वर्य, शक्ति माँ के अनुग्रह से ही होता है। इसलिए महालक्ष्मी 'चिछ्शक्ति' स्वरूपिणी नाम से ख्यात है। अर्थात् शाश्वत, सत्य, अनंत, परिपूर्ण आनंद तत्त्व महालक्ष्मी का निर्वचन है। जगतया लक्ष्यमाणा सा लक्ष्मीरिति गीयते। श्री महालक्ष्मी जगन्माता रूप में व्याप्त होकर स्थित होती है। इसी प्रकार नारायण के हृदय में भी निवास करती है। लक्ष्मी के हृदय में नारायण स्थित होता है। इसलिए दोनों जगत्कारणभूत होते हैं।

नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते
नारायणोऽपि तव हृत्कमले यथास्ते
नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव
तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः।

दया स्वरूपिणी लक्ष्मी शब्द के लाभ, प्रयोजन, संपत्, क्षेम, अभिवृद्धि, योग इस प्रकार के अनेक नानार्थ वेद में वर्णन किया गया है। श्रीमन्नारायण दया चिह्न है। अभिवृद्धि, संपत् के मूलभूत माँ ही होती है। इसलिए माँ को 'लक्ष्मी' कहते है। महालक्ष्मी समस्त जगत की स्वमिनी है। वेंकटेश्वर की पटरानी है। भगवान् के अत्यंत प्रिया है। प्रेम, दया, त्याग, क्षमा, शक्ति, भूति, धैर्य उनके अलङ्कार और गुण है।

सिद्धि स्वाहा स्वधा शक्ति शुद्धा सर्वार्थसाधिनी।
इच्छा सृष्टि धृति भूमिः कीर्ति श्रद्धा दया मतिः।
स्मृतिर्मेधा धृतिर्ह्री श्रीविद्याविबुधवन्दिता
ब्रह्मस्तुता ब्रह्मरतिर्निष्कृतिः कामधुक् परा।
प्रतिज्ञा सन्ततिर्भूमि धीः प्रज्ञा विश्वभामिनी।।

लक्ष्मीदेवी को प्रकाश बहुत प्रिय लगता है। ज्ञान के चिह्न दीप अत्यंत प्रिय है। लक्ष्मीदेवी क्षीरसागर कन्या है। पुराणों में इस विषय का वर्णन किया गया है। लक्ष्मीदेवी भृगु महर्षि की बेटी भी है। उसके लिए पुराणों में एक कथा का वर्णन भी है। भृगु महर्षि ब्रह्मदेव के मानसपुत्रों में पहला पुत्र है। उनकी पत्नी का नाम है 'ख्याति' और उन दोनों की पुत्री के रूप में लक्ष्मीदेवी जन्म लिया है। दक्ष प्रजापति स्तनप्रदेश से जन्म हुआ 'धर्म' नामक पुत्र प्रजापति बनता है। उसको दस पत्नियाँ है। उनके आँठवी पत्नी को नर, नारायण, हरि, कृष्ण नामक विष्णु अंश से चार पुत्र उत्पन्न होते हैं। उनमें नारायण तप करने में लीन होता है। अप्सरस वह तप भंग करते हैं। उनको नारायण, विश्वरूप दिखाते है। यह विषय जानकर भृगु पुत्री विष्णु को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए तप करती है। तब विष्णुदेव प्रत्यक्ष होता है। लक्ष्मी को वर माँगने के लिए कहता है। लक्ष्मी ने विष्णु से विश्वरूप दिखाने के लिए पूछती है। लक्ष्मी देवी विष्णु के विश्वरूप देखकर संतुष्ट होकर पत्नी के रूप में ग्रहण करने के लिए वर माँगती है। इन्द्र मध्यवर्ति होकर अत्यंत वैभव से लक्ष्मीदेवी और विष्णु का विवाह करवाता है। उस समय से लक्ष्मीदेवी लोक जननी के रूप में भक्तों से पूजा लेती है। संपदा की अधिष्ठात्रि देवी लक्ष्मी है।

अनाद्यानन्तरूपां त्वां जननीं सर्व देहिनाम्
श्रीविष्णुरूपिणीं वन्दे महालक्ष्मीं परेश्वरीम्।
भुक्ति मुक्तिं च धातुं वै संस्थितां करवीरके
श्रीविष्णुरूपिणीं वन्दे महालक्ष्मीं परेश्वरीम्।।

श्री विष्णु के अत्यन्त प्रिय श्री महालक्ष्मी हमेशा पद्मासन में बैठकर सुंदर हाथों में पद्मों को धारण कर दर्शन देती है। पद्म में विराजमान होती है। उससे 'अलर् मेल् मंगा' नाम 'अलमेलुमंगा' नाम से भक्त प्रेम भाव से पुकारते है। वेंकटेश्वर हृदय पद्म में सदा रहकर भक्तजनों की इच्छाओं को अनायाश से पूर्ति कर देती है। लक्ष्मीदेवी वेंकटेश्वर के हृदय कमल में स्थिर होने से श्रीनिवास नाम विख्यात होगया। 'हृदय सरसिजे भूतकारुण्य लक्ष्मीः' समस्त भूतों पर दया भाव से अनुग्रह देती है। स्वामी से भी दया देने के प्रेरित कराते लक्ष्मी का व्यूहलक्ष्मी नाम प्रख्यात है। व्यूहलक्ष्मी श्रीनिवास के हृदयपद्म में श्रीवत्स आभरण से स्थिर रहा। लक्ष्मी पद का अर्थ है चिह्न, श्रीनिवास के अपार, अनंत, आनंदमय दया के चिह्न है। दया स्वरूपिणी माँ होने से सभी देवतागण माँ को आश्रय देती है। श्रीनिवास के हृदय में ही नही हैं, परंतु स्वामी के शरीर में भाग्यलक्ष्मी रूप में कमल सदृश श्रीनिवास करतल भाग में सदा दानलक्ष्मी में दो भुजाओं में वीरलक्ष्मी के रूप में हृदय कमल में, भूत कारुण्य लक्ष्मी के रूप में नंदक खड्गाग्र में सौर्यलक्ष्मी के रूप में श्रीनिवास के निखिल गुणगण में, कीर्तिलक्ष्मी के रूप में शरीर में, शांत स्वरूप होने से सौम्यलक्ष्मी के रूप में सर्वसाम्राज्यलक्ष्मी के रूप में श्रीनिवास के सभी शरीर में पाद से हृदय तक 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में कई नामों से प्रसिद्ध है। लक्ष्मी के सौभाग्य से ही श्रीनिवास को इस प्रकार कीर्तन किया गया है।

वक्त्राब्जे भाग्यलक्ष्मीः करतल कमले सर्वदा दानलक्ष्मीः
दोर्दण्डे वीरलक्ष्मीः दया सरसिजे भूतकारुण्यलक्ष्मीः
खड्गाग्रे शौर्यलक्ष्मीः निखिलगुणगणाडंबरे कीर्तिलक्ष्मीः
सर्वाङ्गे सौम्यलक्ष्मीः मयितु विजयताम् सर्वसाम्राज्यलक्ष्मीः।

श्री महालक्ष्मी 'अनपायिनी' रूप में सदा रहने से ही श्रीनिवास को सभी देवतागण इस प्रकार स्तुति करते है-

''एवं यथा जगत् स्वामी देवदेवो जनार्दनः।
अवतारं करोत्येषा श्रीः तत् सहायिनी।।''

माँ लक्ष्मीदेवी ने सुरभि नामक सागर में जन्म लिया। यज्ञकुण्ड से दक्षिणा नामक द्रव्यं लेती है। देवमाता अदिति रूप भी लक्ष्मी है। कमल से निष्पन्ना 'कमला' नाम से प्रसिद्ध है। कन्या दान के समय में स्वधा नाम से स्थित होती है। सूर्य में 'तेजो लक्ष्मी' नाम से रहती है। एक बार सभी मुनिगण जगत में स्वेच्छा संचार के लिए माँ की प्रार्थना करते हैं। पुण्यशील, उत्तमगतिवाले, प्रभु लोग गृहस्थ के घरों में सदा निवास करती है। माँ लक्ष्मी के अवतारों के बारे में 'जयाख्य संहिता' लक्ष्मी तंत्र और श्री प्रश्न संहिता नामक उपग्रंथ में बहुत विवरण दिया गया है। श्री, कीर्ति, जया, माया, चार नामों से श्री महालक्ष्मी अवतार लेती है। उसी प्रकार श्री महालक्ष्मी, श्री कामेश्वरी कांति, क्रिया, शक्ति, विभूति, इच्छा, प्रीति, रती, माया, धी, महिमा नामों से बारह अवतारों का धारण किया है। श्री महालक्ष्मी सत्वगुण संपन्न माँ है। सृष्टि में हर एक पदार्थ का विशेष गुण होता है। हर एक पदार्थ की विशेषता जो होता है वही लक्ष्मी है। इन्द्रियों को ऐश्वर्य आत्म चैतन्य से होता है वही चैतन्य लक्ष्मी है। भगवान जिस प्रकार हलाहल धारण किये रहते है उसी प्रकार ही हमें अनुग्रह देते है। उसी प्रकार माँ के अनुग्रह के लिए बड़ी साधना, श्रम की आवश्यकता है। माँ का नाम जप करने से ही कटाक्ष की प्राप्ति होती है।

मन्नाम स्मरतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम्।
ददामि सर्वमिष्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम्।।

लक्ष्मी नाम स्मरण करने से कोई असाध्य नही होता है। लक्ष्मी नाम जप करने से यथेच्छ वर माँ देती है। सभी संपदाओं का माँ अधिष्ठात्री है। शांत, इन्द्रियनिग्रह लोभ, मोह, काम, शेष, अहंकार, मद विहीन मंगलरूपिणी महालक्ष्मी माँ है। उसी माँ की पूजा आठ रूपों में भक्तजन करते है। १. आदिलक्ष्मी २. विद्यालक्ष्मी ३. धनलक्ष्मी ४. धान्यलक्ष्मी ५. धैर्यलक्ष्मी ६. गजलक्ष्मी ७. विजयलक्ष्मी ८. संतान लक्ष्मी।

१. आदिलक्ष्मी लक्ष्मी की मूर्तियों में प्रधान पराशक्ति आदिलक्ष्मी है। सर्वव्यापी, ऐश्वर्यरूपिणी के रूप में माँ साक्षात्कार देती है। अभयमुद्रा अच्छी तरह सामुद्रिक लक्षणों से माँ दर्शन देती है। **२. विद्यालक्ष्मी** ये लक्ष्मी ऐश्वर्य है। अभय, वरदमुद्रा से, दोनों हाथों में पद्म धारणकर विद्यालक्ष्मी दर्शन देती है। बुद्धि, ज्ञान के साथ समस्त विद्याओं का प्रदात्री है। **३. धनलक्ष्मी** अभय वरदमुद्राओं से, दो पद्म से चार हाथों से, सुवर्ण कलश, शंख चक्र से महालक्ष्मी दर्शन देते है। धनलक्ष्मी धन के अधिष्ठात्री है। **४. धान्यलक्ष्मी** अभयवरदमुद्राओं से दोनों हाथों से पद्म मृणाल को हाथ में धारण कर दर्शन देती है। माँ धान्यलक्ष्मी सस्य प्रदायिनी है। समस्त भूतगण अन्न के आधार से ही काल बिताते हैं। धान्यलक्ष्मी स्वाहा स्वधा दो स्वरूप है। पितृ देवताओं को अन्न माँ से ही होता है। भूमण्डल में समस्त सस्य वन, नदी जल माँ धान्यलक्ष्मी के प्रतिरूप है। **५. धैर्यलक्ष्मी** यह लक्ष्मी वरलक्ष्मी नाम से भक्तगण पूजा करते हैं। हर एक काम करने के लिए धैर्य आवश्यक है। माँ महालक्ष्मी धैर्य प्रदायिनी है। धैर्य गुण के अधिष्ठात्री है धैर्यलक्ष्मी। **६. गजलक्ष्मी** अभय वरदमुद्रा से पद्म पुष्पों से गजलक्ष्मी दर्शन देती है। सरोवर में पद्मासीन होकर दर्शन देते महालक्ष्मी की रूप गृह द्वार के ऊपर रहने से वह घर अष्टैश्वर्यों से शोभित होता है। **७. विजयलक्ष्मी** अभयमुद्राओं, शंखचक्रों से दर्शन देते महालक्ष्मी हमारे इच्छित क्षेत्र में देती है। विजय देना माँ की लक्ष्य है। **८. संतान लक्ष्मी** अपने पोते में शिशु को रहकर अभय मुद्रा से, दोनों कलशों से साक्षात्कार संतान लक्ष्मी देती है। सभी लोग माँ की कृपा के लिए प्रार्थना करते हैं। मानवजाति-प्रगति, संपत् सभी अष्टलक्ष्मी की पूजा से ही होता है। अष्टलक्ष्मी की पूजा दिवाली पर्व दिन में लोग करते है। लक्ष्मीदेवी क्षीरसागर से जन्म लिया।

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीं
दासीभूत समस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्कुराम्
श्रीमन्मन्द कटाक्षलब्धविभव ब्रह्मेन्द्र गङ्गाधरां
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्।।

लक्ष्मी क्षीरसागर से कांति वर्षाते हुए हाथ में पद्म धारणकर बाहर आयी है। बाद में लक्ष्मी दिव्यमाल्य दिव्याम्बर धारणकर भूषणों से अलंकृत होती है। सभी देवतागण देखते हुए श्रीहरि वक्षःस्थल में प्रवेश किया।

नमस्ते सर्वलोकानां जननीमब्जसंभवाम्।
श्रियमुन्निद्र पद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्।।

वहाँ सभी लोग लक्ष्मीदेवी की स्तुति किये है। लक्ष्मी देवी प्रत्यक्ष होने से इन्द्र ने ये स्तोत्र पठन की। 'ये स्तोत्र पढनेवालों को संपदा प्राप्ति और अनुग्रह माँ देती है।' माँ लक्ष्मी कटाक्ष होने के लिए शिशु को 'लक्ष्मी' नाम रखते है। लक्ष्मी बुद्धि है, भगवान् विष्णु धर्म है। माँ सक्रिया है। विष्णु स्त्रष्टा है। लक्ष्मी की स्पर्श से ही हरि पुलकित होता है। माँ का कटाक्ष सकल वैभव के कारण है। इसलिए जगन्माता होगया। बीजाक्षर निघण्टु के प्रकार वर्णमाला में पहला अक्षर 'अ' कार विष्णु है। लक्ष्मीदेवी प्रकृति है, नारायण पुरुष है। एक दूसरे केलिए लक्ष्मी नारायण निवास करते है।

आत्मविद्या शिवः पश्चाच्छिवोविद्या स्वयं पुनः।
सर्व तत्वं च तत्त्वानि प्रोक्तानि त्रिपदात्मनः।।

अर्थात् - आत्मविद्या, शिव, विद्या, आत्मा तथा सर्वतत्त्व ये सात तत्त्व त्रिपुरा तत्त्व कहते हैं। श्रीललिता सहस्रनाम में भगवती के निम्नलिखित तीन नाम आता है - तत्त्वाधिका, तत्त्वमयी, तत्त्वमर्थस्वरूपिणी अर्थात् छत्तीस तत्त्वों से भी जो अधिक है वही भगवती का तत्त्व है। श्री महालक्ष्मी विष्णु भगवान की आज्ञा से ही महालक्ष्मी भगवान के वक्षःस्थल में व्यूहलक्ष्मी के रूप में आविर्भूत हुई है। अम्बा! जगदेकमाता अलमेलुमंगम्म! माँ! श्रीनिवास प्रिया! पद्मावती नामों से भक्तगण महालक्ष्मी को बुलाते है। भगवान श्री वेंकटेश्वर माँ के अनुग्रह के लिए बारह वर्षों तक तप किया। अंत में माँ पद्मसरोवर से पंचमी की तिथि में उद्भव हुई है। महालक्ष्मी को पद्मावती नाम से भक्तजन कीर्तन करते है। 'नित्यकल्याण हरातोरण' से माँ का मंदिर भक्तजनों से शोभायमान होता है। भक्तगण 'श्री पद्मावत्यै नमः' मंत्र से पूजा करते है। माँ प्रीति भाव से यथेच्छ वर देती हैं।

लक्ष्मी रमण गोविन्दा!

श्री वेदान्ति स्वामीजी

- श्रीमती नीता गोकुलजी दरक

जन्मनक्षत्र - फाल्गुन मास, उत्तरफाल्गुनि नक्षत्र

अवतार स्थल - तिरुनारायणपुरम् (मेल्कोटे)

आचार्य - श्री पराशरभट्टर स्वामीजी

शिष्य - श्री कलिवैरिदास स्वामीजी, श्री सेनाधिपति जीयर इत्यादि

परमपद प्राप्त स्थान - श्रीरंगम्

ग्रन्थ रचना - तिरुवाय्मोळि ९००० पडि व्याख्यान, कन्निनुन् शिरुत्ताम्बु व्याख्यान, तिरुप्पावै व्याख्यान, तिरुवन्दादि व्याख्यान, शरणागति गद्य व्याख्यान, तिरुप्पल्लाण्डु व्याख्यान, रहस्यत्रय विवरण (नूट्टेट्टु नामक ग्रन्थ) इत्यादि।

नंजियर माधवर के रूप में जन्म लेकर अद्वैत तत्त्वज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान बने। भविष्यकाल में श्री पराशरभट्टर स्वामीजी की असीम कृपा से वह नंजियर के नाम से प्रसिद्ध हुए और वह निगमान्त योगी और वेदान्ति के नाम से भी जाने गए।

श्री माधवर अद्वैत तत्त्वज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान थे जिनका निवास स्थान तिरुनारायणपुरम् (मेल्कोटे) था। श्री रामानुज स्वामीजी की इच्छा थी की माधवर का परिवर्तन/सुधार हो और अद्वैत तत्त्वज्ञान का त्याग कर श्रीविशिष्टाद्वैत को स्वीकार कर भगवान श्रीमन्नारायण की सेवा में संलग्न हो। इसी सदिच्छा से श्री पराशरभट्टर स्वामीजी को तिरुनारायणपुरम् जाकर माधवर को सुधारने का आदेश देते है। श्री गुरुपरम्परा के आधार पर यह स्पष्ट है की माधवर अद्वैतिन होने के भावजूद श्री रामानुज स्वामीजी के प्रति सम्मान/आदर था।

माधवर ने भी श्री पराशरभट्टर स्वामीजी के कई किस्से सुने और उनसे मिलने के लिये बहुत उत्सुक थे। भगवान की असीम कृपा से उन दोनों का सम्मेलन वाद-विवाद से शुरू हुआ और अन्त में माधवर पराजित होकर श्री पराशरभट्टर स्वामीजी के शिष्य बने। वाद-विवाद के पश्चात्, माधवर के घर आस-पास के अन्य श्रीवैष्णव पहुँचते है और माधवर को परिवर्तित देखर आश्चर्यचकित हो जाते है। उसी दौरान भट्टर से वाद-विवाद में पराजित पाकर, भट्टर से विनम्र भावना से माधवर कहते है - आप श्रीमान श्रीरंगम् से अपने आचार्य के आदेशानुसार अपने निज वैभव को छोड़कर सामान्य पोशाक पहनकर मुझे परिवर्तन करने हेतु मुझ से आप श्रीमान ने वाद-विवाद किया। इसी कारण मैं आपका आभारी हूँ और आप श्रीमान बताएँ की अब मैं क्या करूँ। श्री भट्टर उनके विनम्रता से प्रसन्न होकर कहा - माधवर तुम अरुळिच्चेयल् (दिव्यप्रबंध) सत्सम्प्रदाय के ग्रन्थों में निपुणता प्राप्त करो और फिर श्रीरंगम् चले गए।

वार्षिक तिरुनक्षत्र के संदर्भ में...

(२१.०३.२०१९)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सूचना

लाइसेंस प्राप्त पिस्तोल और खतरनाक औजारों जैसे चीजों को मंदिर में ले जाना मना है।

- प्रजासंपर्काधिकारी, ति.ति.दे., तिरुपति।

श्री माधवर अपनी सत्पत्नियों की (उनके) कैंकर्य के प्रति प्रतिकूल व्यवहार से आचार्य सम्बन्ध के वियोग में असंतुष्ट होकर सन्यास लेने की इच्छा से अपने आचार्य की सेवा करने हेतु श्रीरंगम् चले गए। जाने से पहले अपना धन-संपत्ति दोनों औरतों को बराबर बाँट कर (शास्त्र कहता है- सन्यास लेने से पूर्व अपनी स्त्री के देखभाल/ध्यान रखने का इन्तजाम करना चाहिए।) सन्यासाश्रम स्वीकार कर माधवर श्रीरंगम् की ओर निकल पडे। उनके यात्रा के दौरान उनकी भेंट श्री अनन्ताळवान स्वामीजी से हुई। श्री अनन्ताळवान ने उनसे सन्यासाश्रम लेने का कारण जाना और माधवर से कहा - वह तिरुमन्त्र में पैदा हो (आत्मस्वरूपज्ञान को समझे), द्वयमंत्र में फले-फूले (एम्पेरुमान-पिराट्टि) की सेवा में संलग्न हो और भट्टर की सेवा करे तो अवश्य एम्पेरुमान उनको मोक्ष प्रदान करेंगे। भट्टर माधवर की उत्कृष्ट आचार्य-भक्ति और निष्टा से प्रसन्न होकर उनको स्वीकार कर ''नम्-जीयर'' से सम्भोधित करते है और तबसे नम्-जीयर के नाम से प्रसिद्ध हुए।

भट्टर जी और नंजियर आचार्य-शिष्य सम्बन्ध के उपयुक्त/आदर्शस्वरूप उदाहरण है क्योंकि नंजियर सब कुछ छोड़कर अपने आचार्य की सेवा में जुट गए। भट्टर अपने शिष्य नंजियर को तिरुक्कुरुगै पिरान्पिळ्ळान् के ६००० पाडि व्याख्यान (जो तिरुवाय्मोळि पर आधारित है) सिखाए। भट्टर जी के निर्देशानुसार नंजियर ने तिरुवाय्मोळि पर ९००० पाडि व्याख्यान की रचना किए। नंजियर की विशेषता यह थी की उन्होंने अपने सौ वर्षों के जीवनकाल में तिरुवाय्मोळि पर सौ बार प्रवचन दिए।

नंजियर का आचार्य-भक्ति असीमित थी। उनके जीवन में संघटित कुछ संघटनों पर विशेष दर्शन प्रस्तुत है।

एक बार भट्टर अपनी पालकी पर सवार हुए थे तब नंजियर अपने एक भुज पर त्रिदण्ड रखे हुए आचार्य की पालकी को अपने दूसरे भुज से सहारा दिये। तब भट्टर नंजियर से कहे- ''यह व्यवहार तुम्हारे सन्यासाश्रम के लिए शोभादायक नही है और तुम्हे मुझे इस प्रकार सहारा नही देना चाहिए।'' यह सुनकर नंजियर कहते है - अगर मेरा त्रिदण्ड आपकी सेवा में बाधा है तो मैं अभी इसी वक्त इस त्रिदण्ड को तोडकर अपने सन्यास का त्याग कर दूँगा।

एक बार नंजियर के कुछ अनुचर (एकांगि) श्री भट्टर के आगमन से उनके बगीचे में मची उपद्रव को लेकर नंजियर से शिकायत किए। नंजियर ने कहा - आचार्य अपना मस्तक शिष्य के गोद में रखकर सोने का व्यावहारिक प्रथा पौराणिक काल से प्रचलित है। इसी संदर्भ में एक बार श्री भट्टर नंजियर के गोद में बहुत देर तक सो गए। जब भट्टर की निद्रावस्था सम्पूर्ण हुई उन्हे तब एहसास हुआ की उस दौरान नंजियर स्थितप्रज्ञ/निश्चल रहे। उनकी निश्चलता यह बगीचा उनके आचार्य की सेवा के लिए है नाकि भगवान की सेवा के लिए और आगे से यह बात को अच्छी तरह ध्यान में रखते हुए उनकी सेवा करें। और दृढ़ता को देखर श्री भट्टर ने उन्हे वापस द्वयमहामंत्र का उपदेश फिर से किया।

नंजियर बहुत जल्दि अरुळिच्चेयल् सीखकर अरुळिच्चेयल् में निपुण हो गए। हर रोज भट्टर नंजियर से अरुळिच्चेयल् पाशुरों को सुनकर उनका गूढ़ार्थ सुस्पष्ट अप्रत्यक्ष सुन्दर तौर से प्रस्तुत किया करते थे। एक बार 'नंजियर तिरुवाय्मोळि' के पाशुर को एक बार में ही सुना दिया। यह सुनकर भट्टर मूर्छित हो गए और जब भट्टर मूर्छावस्था से जगे उन्होंने कहा कि यह वाक्य पूर्ण तरह से पढ़कर सुनाना चाहिए और इसे पढ़ते वक्त इसका विच्छेद कदाचित नहीं करना चाहिए क्योंकि विच्छेद से वाक्य तात्पर्य बदल जाती है।

नंजियर के अरुळिच्चेयल् निपुणता को भट्टर हमेशा प्रसंशनीय मानते थे क्योंकि नंजियर तो संस्कृत के विद्वान थे जिनकी मातृ-भाषा तमिळ नहीं थी। भट्टर और नंजियर के बीच में चित्ताकर्षक दिलचस्प वार्तालाप होते रहते थे। हलांकि संस्कृत विद्वान होने के बावजूद नंजियर हमेशा निश्चित रूप से अपने संदेहों का स्पष्टीकरण समाधान अपने आचार्य भट्टर से पाते थे। अब वही वार्तालाप का संक्षिप्त वर्णन भगवद्-बन्धों के लिए प्रस्तुत है-

१. नंजियर भट्टर से पूछते है - क्यों सारे आळ्वार भगवान श्रीकृष्ण के प्रति आकर्षित थे, उसका क्या कारण है? भट्टर इसका उत्तर कुछ इस प्रकार देते है- जैसे साधारण मानव हालही में घटित संघटनों को याद रखते है उसी प्रकार आळ्वारों ने अभी-अभी अवतरित भगवान श्रीकृष्ण और उनकी लीलाओं के प्रति विशेष आकर्षण था। इसके अलावा कुछ आळ्वारों का आविर्भाव भगवान श्रीकृष्ण के समय में हुआ परन्तु भगवान से मिल नही पाए और इस कारण भी वह सारे आकर्षित थे।

२. भट्टर समझाते हुए नंजियर से कहते है - भगवान श्रीकृष्ण गोकुल में पैदा हुए। भगवान श्रीकृष्ण जहा भी गए उनका सामना मामा कंस ने असुरनुचरों से हुआ और कई तो उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे - कब श्रीकृष्ण आए और कब वह उनका संहार करें। हलांकि स्वाभाविक रूप से श्रीकृष्ण उतने सक्षम नही की वह असुरों का संहार करे (यानि श्रीकृष्ण तब किशोरवस्था में थे) परन्तु इसके विपरीत में देखे तो भगवान के रामावतार में भगवान श्रीराम अस्त्र-शस्त्र विद्या सीखें, उनके पिता राजा दशरथ भी अस्त्र-शस्त्र में निपुण थे और यही निपुणता उन्होंने इन्द्र को सहायता देकर साबित किए, भगवान श्रीराम के भाई-लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भी भलि-भाँति अस्त्र-शस्त्र विद्या से परिचित और निपुण थे... यह सब सोचकर श्री पेरियाळ्वार सदैव श्रीकृष्ण भगवान के लिए चिन्ताग्रस्त और व्याकुल रहते थे... इसी कारण वह भगवान के खुशहालि के लिए प्रार्थना किया करते थे और यह स्पष्ट रूप से उनके तिरुमोळि में उन्होंने दर्शाया है।

३. श्री परकाल स्वामीजी अपने तिरुमोळि के अन्तिम पाशुरों के इस ''ओरु नाल् शुट्ट्रम्'' पाशुर में कई दिव्यदेशों का मंगलाशासन करते है। नंजियर भट्टर से इस पाशुर में श्री परकाल स्वामीजी द्वारा किए गए मंगलाशासन के विषय पर संदेह प्रकट करते है। भट्टर तब कहते है - जैसे एक विवाहित स्त्री अपने सखा-सखीयों, रिश्तेदारों से मिलकर बिदा लेती है उसी प्रकार श्री परकाल स्वामीजी इस भौतिक जगत में स्थित दिव्यदेशों के एम्पेरुमानों का दर्शन पाकर उनका मंगलाशासन करके श्रीधाम की ओर प्रस्थान हुए।

४. नंजियर भट्टर से पूछते है - क्यों भक्त प्रह्लाद जो धन-संपत्ति में कदाचित भी रुचि नही रखते थे उन्होंने अपने पोते महाबलि को यह श्राप दिया - ''तुम्हारा सारा धन-संपत्ति का विनाश होगा अगर तुम भगवान का निरादर करोगे।'' इस पर भट्टर ने कहा - जिस प्रकार एक कुत्ते को अगर दंड देने हो तो उसका मैला/गंदा खाना उससे दूर कर दिया जाता है उसी प्रकार का दंड प्रह्लाद ने अपने पोते को दिया।

५. नंजियर भट्टर से वामन चरित्र के संदर्भ में कुछ इस प्रकार पूछते है - क्यों महाबलि पाताल लोक गए? क्यों शुक्राचार्य की एक आँख चली गई? भट्टर इसके उत्तर में कहते है - शुक्राचार्य ने महाबलि को उनके धर्म कार्य करने से रोका और अपना आँख गवाए। महाराज श्री बलि ने अपने आचार्य की बात/सदुपदेश नही माने और अतः उन्हें दंड के रूप में पाताल लोक जाना पडा।

६. नंजियर पूछते है - प्रिय भट्टर कृपया बताएँ क्यों श्रीरामचन्द्र के पिताजी श्री दशरथ जो भगवान का वियोग सह नही पाए और प्राण त्यागने पर उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हुई? भट्टर इसके उत्तर में कहते है - श्री दशरथ को केवल सामान्य-धर्म (सच बोलने का धर्म) के प्रति लगाव था और पिता होने का भावजूद उन्होंने उनके संरक्षण का धर्म त्याग दिया- इस कारण उन्हे तो नरक प्राप्त होना चाहिए परन्तु भगवान के पिता की भूमिका निभाने के कारण उन्हे स्वर्ग की प्राप्ति हुई।

७. नंजियर पूछते है - भट्टर कृपा कर बताएँ क्यों वानर राजा सुग्रीव, विभीषण को स्वीकार करने में संकोच कर रहे थे हलांकि विभीषण तो श्रीरामचन्द्र के भक्त थे। इसके उत्तर में भट्टर कहते है - जिस प्रकार भगवान श्रीराम अपने शरणागत भक्त श्री विभीषण को स्वीकार करने और उनके संरक्षण के इच्छुक थे उसी प्रकार राजा सुग्रीव के शरणागत में आए हुए भगवान को संरक्षण दे रहे थे और उन्हे चिंता थी की विभीषण कहीं भगवान को हानि न पहुँचाए।

८. नंजियर भट्टर से पूछते है - जब भगवान श्रीकृष्ण अपने दुष्ट मामा कंस का उद्धार करके अपने माता-पिता (देवकी-वसुदेव) से मिले, तब अत्यंत वात्सल्य भाव में मग्न होने से उनकी माता देवकी के स्तन भर गए। भगवान श्रीकृष्ण ने यह कैसे स्वीकार किया? इस पर श्री भट्टर ने गम्भीरता-रहित बताया - यह एक माँ और बेटे के बीच का संबन्ध है। इसके विषय में आगे भट्टर ने कहा - जिस प्रकार भगवान ने पूतना (जो भगवान को विषपूरित स्तन दूध से मारना चाहती थी) को माँ स्वरूप स्वीकार किया उसी प्रकार भगवान ने माँ देवकी के इस वात्सल्य भाव को स्वीकार किया।

९. भट्टर ययाति के जीवन चरित्र को अपने उपन्यास के दौरान समझाते है। यह उदाहरण के तौर पर समझने के पश्चात् नंजियर भट्टर से पूछते है - यह चरित्र का उद्देश्य क्या है स्वामी? भट्टर यह चरित्र के उदाहरण से भगवान श्रीमन्नारायण के विशेष स्थान और श्रेष्ठता को दर्शाते हुए समझाते है कि भगवान अपने प्रपन्न भक्तों को कम से कम साम्याप्ति मोक्ष देने

में सक्षम है और इसके विपरीत में अन्य देवता, अन्य प्राणि (जिसने सौ अश्वमेध यज्ञ पूरा किया हो) को अपने योग्य कदाचित भी स्वीकार नही कर सकते और किसी न किसी तरह के षडयंत्र से अन्य देवता जीव को स्वर्ग के प्रति असक्षम बनाकर उसे इस भौतिक जगत में ढकेलते है।

अनुवादक टिप्पणी- ययाति सौ अश्वमेध यज्ञ सम्पूर्ण करने के पश्चात् स्वर्ग में प्रवेश करने का अधिकार पाकर स्वर्ग के अधिपति इन्द्र के सिंहासन के सहभागी हुए। परन्तु इन्द्र और अन्य देवता यह सहन नही कर पाए और एक षडयंत्र के माध्यम से ययाति को वापस इस भौतिक जगत के प्रति उकसाकर ययाति को भव सागर में ढकेल दिया। कहते है ऐसे कई वार्तालाप है जिन्में दिव्यप्रबंध और शास्त्रों के गुप्त गूडार्थों का संक्षिप्त निरूपण है। यही वार्तालाप के आधार पर नंजियर ने दिव्यप्रबंधों पर अपनी निपुणता से विशेष टिप्पणी प्रस्तुत की और इसी का स्पष्टीकरण उन्होंने उनके शिष्यों के लिये प्रस्तुत किया।

वयोवृद्ध व दिव्यांगों का दर्शन

तिरुमल में एस.वी.संग्रहालय के सामने, ६५ के ऊपर उम्र के वृद्ध तथा दिव्यांगों के लिए काउण्टर उपलब्ध हैं। यहाँ पर हर दिन १४०० लोगों को मुफ्त में टोकन जारी करके, जल्दी से श्रीवारि दर्शन कराने की सुविधा है। मुफ्त वाहन सुविधा भी है।

नंजियर दिव्यप्रबंधों पर आधारित अपनी टिप्पणी के (जो नौ हजार पाडि व्याख्यान से प्रसिद्ध है) प्रतिलिपि को हस्तलिपि (पाण्डुलिपि) रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। इस कार्य के योग्य सक्षम व्यक्ति श्रीनम्बूर वरदाचार्य हुए और वरदाचार्य ने यह कार्य सम्पूर्ण किया। कार्य संपूर्ण होने के पश्चात् नंजियर ने उन्हे श्री नम्पिळ्ळै का नाम दिया और यही नम्पिळ्ळै हमारे सत्साम्प्रदाय के अगले दर्शन प्रवर्त हुए। वरदाचार्य की व्याख्यान को नंजियर अत्यधिक प्रसंशा करते थे जब वो नंजियर से भी अति उत्तम रूप में गुप्तगूडार्थो को प्रस्तुत किया करते थे। यह नंजियर के उदारशीलता को दर्शाता है।

नंजियर कहते थे - वह व्यक्ति तभी श्रीवैष्णव होगा अगर वह दूसरे श्रीवैष्णव के दुःख को समझने के काबिल हो और यह जानकर दुःखित हो। यह सद्भावना और सम्मान नंजियर को अपने काल के आचार्य और सभी श्रीवैष्णवों के प्रति था।

नंजियर अपने अन्त काल के दौरान रोगग्रस्त हुए। उस अवस्था में उनकी भेंट पेत्रि नामक स्वामी हुई। अरयर स्वामी (पेत्रि) ने नंजियर से पूछा-स्वामी मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ? नंजियर ने व्यक्त किया - वह श्री परकाल स्वामीजी द्वारा विरचित पेरिय तिरुमोळि के तीसरे दशम का छटा पाशुर सुनना चाहता हूँ। नंजियर कहते है कि वह इस पदिगम को सुनने की इच्छा व्यक्त करते है जो श्री परकाल स्वामीजी का एम्पेरुमान के लिये संदेश है (आळ्वार ने उन प्रथम ४ पाशुरों द्वारा अपने संदेश में एम्पेरुमान् को व्यक्त किये परन्तु उसके पश्चात् उनके कमजोरी के कारण उस संदेश को पूर्ण तरह से व्यक्त नही कर सके) - अरयर स्वामी नम्पेरुमाल के सामने इस प्रसंग का जिक्र करते है जिसे सुनकर नंजियर भावुक हो जाते है। नंजियर उनके अन्तकाल में एम्पेरुमान से निवेदन करते है कि वह उनके स्वयं तिरुमेनि में प्रकट हो और नम्पेरुमाल उनकी यह इच्छा को सम्पूर्ण करते है। नंजियर उस घटना से संतुष्ट होकर अपने शिष्यों को कई अन्तिम उपदेश देते है और अपने चरम तिरुमेनि को त्याग कर परमपदम को प्रस्थान हुए।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)

FORM IV

See Rule 8

1.	Place of Publication	: TIRUPATI
2.	Periodicity of its Publication	: Monthly
3.	Honorary Editor	: Sri Anilkumar Singhal, I.A.S., Executive Officer, TTD
4.	Printer's Name	: Sri R.V.Vijaykumar, B.A., B.Ed.,
	Whether citizen of India	: Yes
	Address	: Dy. E.O., (Publications and Press) T.T.D., Tirupati.
5.	Editor & Publisher's Name	: Dr.K.Radha Ramana, M.A, M.Phil, Ph.d
	Whether citizen of India	: Yes
	Address	: Chief Editor, Sapthagiri, T.T.D. Journal, Tirupati.
6.	Name and address of individuals who own the Newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the Total Capital	Board of Trustees represented by the Executive Officer on behalf of T.T.D., Tirupati

I, K.Radha Ramana, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2019

(Sd.) Dr.K.Radha Ramana
Signature of the Publisher

नागलापुरम् - श्री वेदनारायण स्वामी मंदिर

- डॉ.के.एम.भवानी

वेदपुरी, वेदारण्यक्षेत्रं, हरिकंठापुरम् आदि नामों से विख्यात नागलापुरम् आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित है। यह मंदिर पौराणिक विशेषताओं के साथ-साथ ऐतिहासिक और शिल्पकला के लिए भी प्रसिद्ध है।

मंदिर के बारे में

पाँच प्राकारों और सात द्वारों से निर्मित इस मंदिर में शिल्पकला दर्शनलायक है। दक्षिण भारत में वास्तु और शिल्पकला जब उच्च दशा में थे तब विजयनगर के प्रसिद्ध राजा श्रीकृष्णदेवरायलु ने सन् १५१७ में इस मंदिर का जीर्णोद्धारण किए। अपने कलापोषण के लिए मशहूर श्रीकृष्णदेवरायलु ने इस मंदिर को भूलोक वैकुंठ बना दिए।

हरिकंठापुरम् - नागलापुरम् कैसे बना?

महान शासक, योद्धा ही नहीं, श्रीकृष्णदेवरायलु बालाजी के महान भक्त भी थे। उन्होंने अपने शासन काल में कई मंदिरों का जीर्णोद्धारण किए। मुख्यतः वह अपनी जिंदगी में कई बार तिरुमल बालाजी के दर्शन करने आए और हर बार कई बहुमूल्य आभरण और संपत्ति स्वामी को अर्पित किए। इस सिलसिले में जब सन् १५१७ में वे अपनी माता नागलांबा के साथ तिरुमल आए तब बालाजी के दर्शन के बाद वे रास्ते में स्थित वेदनारायण स्वामी मंदिर का भी दर्शन किए। कहा जाता है कि तब श्रीकृष्णदेवराय की माता ने उससे मंदिर का जीर्णोद्धारण करने के लिए कहा, तो रायलु ने ऐसा ही किया। अपनी माता की इच्छा पूरा करके हरिकंठापुरम् नामक उस गाँव का नाम अपनी माता के नाम पर 'नागमांबापुरम्' रख दिया। अंग्रेजों के शासन में इसका नाम 'नागलापुरम्' बन गया।

पौराणिक कहानी

कहा जाता है कि कृतयुग में सोमकासुर नामक राक्षस था। जब ब्रह्म तप में लीन हो गए तब सोमकासुर ने वेदों का अपहरण करके सागर गर्भ में जल के नीचे जाकर छिप गए। सृष्टि रचना के लिए वेद आवश्यक होने के कारण ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु के पास जाकर प्रार्थना की तो विष्णु ने अपना पहला अवतार का धारण किया वही 'मत्स्यावतार' है। मछली रूप विष्णु सोमकासुर को ढूँढते हुए सागर गर्भ में पहुँचे और जल के नीचे छिपा सोमकासुर से लड़ना शुरु किए तो दोनों के बीच में कई सालों तक भयंकर युद्ध

चलता रहा। अंत में भगवान विष्णु ने सोमकासुर का वध करके वेदों को लेकर आए। माना जाता है कि जिस जगह पर भगवान विष्णु ने ब्रह्म को वेदों को वापस दिया वही 'वेदपुरी' या नागलापुरम् है। भगवान विष्णु उसी मत्स्यावतार में उस जगह पर 'स्वयंभू' बनकर अवतरित हुए। काल गति में यह वेदपुरी विभिन्न नामों से बदलते हुए अंत में अब 'नागलापुरम्' पुकार जाने लगा। यहाँ भगवान विष्णु मत्स्यावतार में दिखाई देता है। ऊपर मूर्ति के रूप में रहते हुए नीचे मछली का रूप में स्थित यह मूर्ति अत्यंत शोभायमान है।

तिरुमल - तिरुपति देवस्थान के अधीन में

श्रीकृष्णदेवरायलु के बाद विभिन्न राजाओं के अधीन में रहा यह मंदिर सन् १९६७ में तिरुमल-तिरुपति देवस्थान के अधीन में आ गया। तब से इस मंदिर की शोभा चार चाँद बढ़ने लगी। हर साल यहाँ भगवान को 'ब्रह्मोत्सव', 'प्लवोत्सव' (भगवान के उत्सवमूर्तियों को 'पुष्करिणी' कही जानेवाली नदी में सुसज्जित जहाज या नौका में बिठाकर घुमाना) आदि उत्सव बहुत धूमधाम से मनाए जाते हैं।

शिल्पकला के साथ-साथ वास्तुकला के लिए भी प्रसिद्ध इस मंदिर का निर्माण और एक विशेषता को भी पाई हुई है। हर साल फाल्गुन मास में, अंग्रेजी महीनों के अनुसार मार्च महीने के तीन दिनों में सूरज की किरणें भगवान के मूलमूर्ति तक पहुँचती हैं।

सूर्य पूजा की विशेषता

शिल्पकला के साथ-साथ वास्तुकला के लिए भी प्रसिद्ध इस मंदिर का निर्माण और एक विशेषता को भी पाई हुई है। हर साल फाल्गुन मास में, अंग्रेजी महीनों के अनुसार मार्च महीने के तीन दिनों में सूरज की किरणें भगवान के मूलमूर्ति तक पहुँचती हैं। पहला दिन मूर्ति के पैरों को छूनेवाले ये किरणें दूसरा दिन स्वामी के नाभि पर, तीसरा दिन स्वामी के सिर पर पड़कर मूर्ति की शोभा को सौ गुण बढ़ाते हुए देखनेवालों को चकाचौंध कर देती हैं। शाम के चार बजे के बाद होनेवाले इस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए दूर-दूर से भक्तलोग आकर प्रत्यक्ष भगवान समझा जानेवाला सूर्य भगवान से वेदनारायण मूर्ति को किया जानेवाली इस पूजा को देखकर 'भक्ति' में तन्मय हो जाते हैं।

मत्स्यावतार की विशेषता

मत्स्यावतार के कुछ संदेश इस प्रकार हैं- वेदों को खोने का अर्थ है लापरवाही से ज्ञान को दूर करना। अज्ञान समझा जानेवाला सोमकासुर का वध से अज्ञान को दूर करके, ज्ञान प्रदान करनेवाला वेदों को पाना ज्ञान पाने के समान है। शरीर के मोह को छोड़कर भक्ति और ज्ञान को बढ़ाने से आत्मा के समान सागर में भगवान मत्स्यावतार के रूप में दर्शन देता है। यही इस अवतार का संदेश है।

तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

काम दहन

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

अधर्म सहित शारीरिक वाँछा तामस है। सिर्फ सुख चाहने का रूप राजस है। जो धर्म के विरुद्ध का काम नहीं है, वह मेरा ही स्वरूप है। ऐसा श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कहा। यह सात्विक रूप है। काम की जरूरत है, किन्तू धर्म-सम्मत होना चाहिए।

होली के अवसर पर कही जानेवाली मुख्य कथा ''काम-दहन'' की है। ग्रामीण प्रान्तों के लोग इसे ''कामुनि पुन्नमि'' नाम से व्यवहृत करते हैं। ''काम'' की मूर्ति तैयार करके पूर्णिमा के दिन रात को गलियों में जला देना हम देखा करते हैं। ''काम'' का अर्थ ''मन्मथ'' है। उसका दहन करना इस कथा का इतिवृत्त (मुख्य विषय) है। अनेकों पुराणों में यह वर्णित है। कालिदास (तेलुगु कवि) ने इस कथा का उल्लेख ''कुमार संभव'' नामक ग्रंथ में किया।

स्कन्द पुराण में वर्णित कथा इस प्रकार है। मन्मथ का अर्थ मन्थन करने वाला है। यह, एक व्यक्ति नहीं, बल्कि प्रतीक मात्र है। हम में जो गुण जैसी विविध प्रकार की कामनाएँ है, वे ही मन्मथ हैं। जितना हम इनको वश में करेंगे, उतना ही अच्छा है।

कहते हैं कि तारकासुर नामक राक्षस ने विजृंभित होकर देवताओं का दमन किया। इसका मतलब है तामस शक्तियों ने विजृंभित होकर सात्विक शक्तियों का दमन किया। ''इसका एक ही एक परिष्कार है, शिव-पार्वतियों को पैदा होनेवाला पुत्र, वही इस राक्षस का संहार करेगा'' - ऐसा ब्रह्मदेव ने कहा। शिव तो हिमालयों में तप में डूबे रहने वाला है। पार्वती, पर्वतराज हिमवंत की पुत्री है। उन दोनों में विवाह रचना देवताओं के लिए एक बड़ी समस्या बन गयी। नारद ने किसी भी तरह, अपनी चातुरी से पार्वती का विवाह, शिव से करवाने हिमवंत तथा उसकी पत्नी को मनाया। अब प्रश्न यह उठता है कि शिव, पार्वती को देखें कैसा? देवताओं की कामना के अनुसार पार्वती, तप करनेवाले शिव की सेवा करने को तैयार हुई। ठीक समय पर तप केलिए आवश्यक फूल, फल, पानी इत्यादि जुटा रही थी। फिर भी शिव ने उसे आँख उठाकर भी नहीं देखा। इन्द्रियों ने मन्मथ की प्रार्थना की। उसके सहायक के रूप में कामोद्दीपन करनेवाले वसन्त (वसन्त ऋतु) को भी भेजा। पार्वती के सपर्या करते वक्त, ठीक समय पर मन्मथ ने अपने पुष्प-बाण शिव पर संधाये। शिव का मन चलित हुआ। किन्तु फौरन अपने आपको संभाल कर कारण जानने चारों ओर देखा। मन्मथ को देखकर उससे छुटकारा पाने दूसरी जगह पर चला गया। फिर भी मन्मथ ने उसका पीछा किया। अन्त में शिव ने अपना तृतीय नेत्र खोला। उससे निकली अग्नि ज्वालाओं में मन्मथ भस्मीभूत हुआ।

शिव को पति के रूप में पाने, तप के बिना कोई और रास्ता नहीं है, ऐसा पार्वती ने ग्रहण किया। उसने कठोर तपस्या की। उसके तपोबल के कारण शिव की समाधि स्थिति भंग हुई। एक सुन्दर ब्रह्मचारी

के रूप में आकर शिव ने पार्वती की परीक्षा करने लगे। उसने कहा- ''मैं शिव से भी बड़ा सुन्दर एवं गुणवान हूँ, मेरे साथ विवाह कर लो।'' पार्वती ने उसके सारे प्रश्नों का समाधान देकर उसका तिरस्कार किया। शिव ने अपना असली स्वरूप दिखाकर उसके साथ विवाह कर लिया।

इस कथा का अर्थ क्या है? उसका अर्थ पुराणों में मिलता है। तारकासुर, तमोगुण व अज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान के द्वारा अज्ञान को मिटाना चाहिए। स्वयं शिव अपने ज्ञान नेत्र से तारकासुर का अन्त कर सकता है। किन्तु पुराणों का उद्देश्य यह है कि, ''शिव पार्वतियों का विवाह किस प्रकार संपन्न किया जाय, अपवित्र देह व मन का संयोग नहीं होना चाहिए।'' इसीलिए शिव-पार्वतियों के तप करने का अंश सामने आया। तप का अर्थ है, अन्तःकरण को पवित्र बना लेना, काम क्रोध आदि को दूर कर लेना। कोई मुख्य कार्य संपन्न करना है तो, उसका मूल कारण तप ही है। पहले पार्वती ने अपनी सुन्दरता के द्वारा शिव को वश में कर लेना चाहा। किन्तु शिव ने अपने ज्ञान-नेत्र से ''काम'' का दहन किया। इसका मतलब है ज्ञान के सामने कामनाएँ ठहर नहीं सकतीं। भगवद्गीता में ज्ञान की तुलना अग्नि से की गयी। पार्वती ने जान लिया कि आपका चुना हुआ मार्ग सही रास्ता नहीं है। अन्तःकरण की शुद्धि चाहिए। इसलिए तप करने तैयार हुई।

शिव ने पार्वती की परीक्षा ली। इसका मतलब है, उसके मन व परिशुद्धता की परिपक्वता की जाँच की। ''शिव का बडप्पन क्या है?'' - पार्वती ने माया ब्रह्मचारी के इस प्रश्न का जवाब देती शिव के स्वरूप का बखान किया।'' शिव के कुल-गोत्र नहीं है, माँ-बाप नहीं हैं'' - का अर्थ है जगत-कारण-तत्त्व का दूसरा कोई कारण नहीं रहता। दिगन्तों तक, प्रपंच भर में व्याप्त होनेवाले के वस्त्र दिक् (दिशाएँ) ही हैं। इसलिए उसको दगिंबर कहा गया है। त्रिशूल का अर्थ सत्व, रज और तामस नामक त्रिगुणों से युक्त शक्ति है, संसार रूपी शूल (पीड़ा) पैदा करने वाली शक्ति है। स्मशान, माने जन्म-मरण रूपी चक्र बन्धन युक्त परिवार है। उसका वाहन नन्दी (बैल) धर्म का चिह्न है। वृषभ का अर्थ वर्षित होने वाला है। धर्म बरसाने वाला है। इस प्रकार पार्वती ने शिव के अन्य रूप-रेखाओं के प्रतीकार्थ बताये। इस तरह उसने देहाभिमान छोड़कर ज्ञान पा लिया। इसीलिए शिव ने उसके प्रति सहमति प्रकट की। ''तपोद्रव्येण क्रीतः'' - तप रूपी धन से शिव मोल लिया गया। ऐसी पवित्र स्थिति में पैदा होने वाला पुत्र ही स्कन्द है। उसने तारक (तारकासुर) का याने अज्ञान का अन्त किया।

स्त्री-पुरुषों के उदात्त जीवन का वर्णन करने के उद्देश्य से ही यह कथा कही गयी है। विवाह एक कैंट्रैक्ट (समझौता) नहीं है। सिर्फ काम-वाँछा ही नहीं है, ऐसा इसमें निहित अर्थ है। काम (कामवासना) का पूरी तरह निराकरण नहीं कर सकते। काम के तीन रूप सात्विक, राजस और तामस हैं; ऐसा पुराणों का कथन है। अधर्म युक्त शारीरिक वाँछा तामस है, सिर्फ सुख पाने की वांछा करने का रूप राजस है, धर्म विरुद्ध न होनेवाला काम मेरा स्वरूप है, ऐसा भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने बताया, यह सात्विक रूप है। काम चाहिए, किन्तु धर्मबद्ध होना चाहिए। ऐसी उदात्त संस्कृति को हम जान नहीं पा रहे हैं। इसीलिए दूसरे लोग हमारी खिल्ली उड़ा रहे हैं। भारत का नाम लेते ही जुगुप्सा पैदा होने की स्थिति उत्पन्न होना, दुर्भाग्य की बात है। युवता के मूल्यों में विकृत रूप पैदा होने की बात विज्ञ लोग ही जानें।

तेलुगु मूल - डॉ.के.अरविन्द राव
(सेवानिवृत डी.जी.पी)
साभार - आन्ध्रज्योति (दैनिक)।

२०१९, जनवरी २७, २८ को कन्याकुमारी, तमिलनाडु प्रांत में ति.ति.देवस्थान के द्वारा निर्मित श्री वेंकटेश्वरस्वामी के नये मंदिर में विग्रह प्रतिष्ठा, कलशस्थापन, महाकुंभाभिषेक के दृश्य

याग कार्यक्रम

पूर्णाहुति

पवित्र जल को लानेवाले अर्चक वृंद व ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी

गर्भालय का महासंप्रोक्षण

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी के मंदिर का छायाचित्र, कन्याकुमारी

जनवरी ३१, २०१९ तारीख को आँध्रप्रदेश की राजधानी अमरावती में श्रीवारि नूतन मंदिर निर्माण के प्रारंभ के उपलक्ष्य में ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित भूकर्षण एवं बीजवपन के दृश्य

ऋत्विजों के द्वारा किये गये वास्तु होम के दृश्य

श्री बालाजी के नये मंदिर निर्माण के अवसर पर ति.ति.दे. के श्री श्री श्री बड़े जीयर स्वामीजी के द्वारा आँ.प्र. के मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबुनायुडु जी को तथा आमजनता को मंगलाशीश देना

महापूर्णाहुति

उभयदेवेरी समेता श्री वेंकटेश्वरस्वामी को नक्षत्र आरती का समर्पण

चतुर्वेद पारायण

आँध्रप्रदेश मुख्यमंत्री माननीय श्री एन.चंद्रबाबुनायुडु जी के द्वारा भूकर्षण करने के दृश्य

जनवरी ३१, २०११ तारीख को आँध्रप्रदेश की राजधानी अमरावती में श्रीवारि नूतन मंदिर निर्माण के प्रारंभ के उपलक्ष्य में ति.ति.दे. के द्वारा आयोजित भूकर्षण एवं बीजवपन के दृश्य

उभयदेवेरियों सहित श्री स्वामीजी का स्नपन तिरुमंजन

श्रीनिवास कल्याणोत्सव

नूतन आलय से संबद्ध निर्माण योजना व नमूनों को कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस.
द्वारा श्री नारा चंद्रबाबुनायुडु जी को सविस्तार विवरण प्रस्तुत करने का दृश्य

माननीय मुख्यमंत्री श्री नारा चंद्रबाबुनायुडु जी के द्वारा बीजवपन करना

इस कार्यक्रम में उपस्थित अनगिनत भक्तजन

दि. २१.१.२०११ को तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी की मूलमूर्ति को रेशमी वस्त्र, मौक्तिक कवच, शंकचक्र तथा मुकुट आदि को ति.ति.दे. बडे जीयर श्री श्री श्री शठगोपरामानुज जीयर के नेतृत्व में श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी के हाथों सौंपना

दि. २१.१.२०११ को तिरुमल में संपन्न श्रीरामकृष्ण तीर्थ मुक्कोटि पर्व

दि. २६.१.२०११ को ७०वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के क्रीडा मैदान में राष्ट्रीय झंडा फेहरा कर, कवायद वंदन को स्वीकारते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस. । इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी (तिरुपति) श्री पोला भास्कर, आई.ए.एस., मुख्य सतर्कता व सुरक्षा अधिकारी श्री गोपीनाथजेट्टी, आई.पी.एस., और अन्य उन्नताधिकारीगण व कर्मचारियों ने भाग लिया।

वैकुण्ठ के द्वारपालों को शाप

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

वैकुण्ठ अर्थात् आध्यात्मिक या नित्य धाम भगवान विष्णु का निवास स्थान है जहाँ किसी प्रकार की ''कुण्ठा'' नहीं है। अर्थात् वह स्थान कष्टों एवं समस्याओं से मुक्त है। वहाँ किसी को किसी से शत्रुता नहीं है। वह जगह आध्यात्मिक विविधता से परिपूर्ण है। उस दिव्य स्थान से विपरीत, हमारा यह जगत कष्टों से भरा होने के कारण ''कुण्ठ लोक'' कहलाता है। इस जगत की समस्या यह है कि यहाँ सभी दुःख, शत्रुता, झगड़े एवं निराशाएँ अत्यंत स्वाभाविक लगते हैं और हमें प्रतीत होता है कि सभी कुछ नाना प्रकार के आनंदों से भरा हुआ है। लेकिन गुरु, संतों एवं भगवान कृष्ण से प्राप्त आध्यात्मिक दृष्टि से देखने पर इस जगत का यह झूठ स्पष्ट दिखने लगता है। हम कई बार भाइयों, पति-पत्नी, सम्बन्धियों, परिवारों, जातियों, समूहों, राज्यों एवं देशों के बीच झगडा देखते हैं लेकिन फिर भी सोचते हैं कि वे सामान्य एवं स्वाभाविक हैं। जब तक हमें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता है तब तक वास्तविकता हृदय को स्पर्श नहीं करती है। वैर भाव से मुक्त स्थान वैकुण्ठ है। भगवान से शुद्ध प्रेम पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने वाला भक्त, मृत्यु के समय भगवान का ध्यान करके, उस अद्भुतस्थान में प्रवेश करता है।

सनक, सनातन, सनंदन, सनतकुमार ब्रह्मा जी के चार पुत्र हैं। एक बार वे स्वेच्छा से भ्रमण करते हुए उत्सुकता पूर्वक वैकुण्ठ पहुँचे। वे सभी पाँच वर्ष के बालक थे और उनके पास बहुत योग शक्ति थी। बालक रूप में वे चार योगी निर्वस्त्र भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने देखा कि वैकुण्ठ में सभी पुरुष चतुर्भुज रूप में थे और वे सभी भगवान विष्णु की अत्युत्तम सेवा में लीन थे। वे सभी रेशमी वस्त्र पहने थे और परम भगवान की सेवा करने के लिए अत्यंत उत्सुक थे। वे मूल्यवान वस्त्रों एवं आभूषणों से भली प्रकार सजी हुई अपनी सुंदर पत्नियों के साथ विमानों में उड़ रहे थे। लेकिन उड़ान करते समय किसी प्रकार का इन्द्रियभोग न करते हुए वे श्रीहरि की महिमा का गायन कर रहे थे। सामान्यतः स्त्री एवं पुरुष स्वाभाविक रूप से एक दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं लेकिन वैकुण्ठ में उनके मध्य आकर्षण बिलकुल न था। पुरुषों एवं स्त्रियों दोनों में काम की कोई इच्छा न थी। वैकुण्ठ की मुक्त आत्मायें काम रहित एवं शुद्ध हृदय वाली होती हैं। उनके हृदय वास्तव में भगवत् प्रेम से भरे होते हैं।

वे चारों भाई वैकुण्ठ में अनेकों कल्पवृक्षों को देखने के लिए भ्रमण करने लगे। अनेक पक्षी जैसे कोयल, मोर आदि पेड़ों पर खेल रहे थे। भंवरे पुष्पों के रसपान से मस्त होकर पेड़ों पर मधुर ध्वनि कर रहे थे। बड़े वृक्षों के अतिरिक्त वहाँ सुगन्धित खिले हुए फूलों के अनेक पौधे भी थे। यद्यपि वैकुण्ठ में अनेकों वृक्ष एवं पौधे थे लेकिन पेड़-पौधों का वह संपूर्ण साम्राज्य भगवान को अत्यंत प्रिय तुलसी को असीमित सम्मान दे रहा था। वृक्षों एवं पौधों में किसी प्रकार का आपसी वैर नहीं था। वास्तव में ऐसा दिव्य वातावरण इस जगत में भी संभव है। यदि कोई अपने जीवन में वैकुण्ठ का माहौल बना सके तो लोगों या जीवों के बीच किसी प्रकार का वैर भाव नहीं होगा। महादेव का परिवार ऐसी स्थिति का सर्वोच्च उदाहरण है। शिवजी और उनकी पत्नी सदैव भगवान हरि के ध्यान में लीन रहते हैं अतः

उनको ले जाने वाले वाहनों के बीच वैर होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। शिवजी की सवारी बैल और दुर्गा माता की सवारी शेर है लेकिन कैलास धाम में शेर और बैल कभी झगड़ा नहीं करते हैं। सर्प शिवजी का आभूषण है और मोर उनके एक पुत्र का वाहन है। यद्यपि सर्प और मोर कभी एक साथ नहीं रह सकते फिर भी वैकुण्ठ के माहौल में वे प्रसन्नता पूर्वक साथ-साथ रहते हैं। शिवजी के दूसरे पुत्र का वाहन चूहा है। फिर भी शिवजी के गले में रहने वाले सर्प का उनके पुत्र के चूहे से कोई झगड़ा नहीं है। इस प्रकार परिवार के सभी सदस्यों के श्रीहरि की भक्ति में लगे रहने के कारण महादेव के घर में सभी विरोधी तत्त्व परस्पर पूर्ण सहयोग से रहते हैं। कृष्ण भक्ति की यही सुंदरता है। इससे तुरंत ही वैकुण्ठ का माहौल बन जाता है।

ब्रह्मा जी के पुत्रों ने देखा कि अनेक सुंदर स्त्रियाँ वहाँ की महल जैसी भव्य इमारतों की दीवारों एवं फर्श को साफ करने में व्यस्त हैं। वास्तव में वहाँ धूल बिलकुल नहीं थी फिर भी वे भगवान से प्रगाढ़ प्रेम होने के कारण कमल के फूलों से दीवारों एवं फर्श की सतह को साफ करने में व्यस्त थीं। उन्होंने स्वच्छ जलाशयों के पास लक्ष्मीजी को भगवान की तुलसी दलों से सेवा करते देखा। जलाशय का पानी इतना स्वच्छ था कि लक्ष्मीजी दर्पण की तरह उसमें अपनी उत्तम सुंदरता को देख पा रही थीं। वास्तव में इस भौतिक जगत का वर्णन आध्यात्मिक जगत की विकृत छवि के रूप में किया गया है। हम यहाँ जो कुछ भी देखते हैं वह आध्यात्मिक जगत में शुद्ध अवस्था में विद्यमान है।

अपनी योग शक्ति द्वारा वैकुण्ठ पहुँचे वे चारों भाई धाम के छह द्वारों को पार करके बहुत अंदर चले गये। अंत में जब सातवें द्वार पर पहुँचे तो द्वारपालों ने उन्हें वहाँ रोक दिया। श्रीमद्भागवतम् में इसका सुंदर वर्णन है। वैकुण्ठ में भगवान के वास्तविक स्थान तक पहुँचने के लिए सात द्वार पार करने होते हैं। चारों भाई भगवान को देखने के लिए इतने उत्सुक थे कि उन्होंने आस-पास की अन्य किसी वस्तु पर ध्यान नहीं दिया। योग में निपुण होने के कारण उन्होंने स्वयं को पाँच वर्ष के बालक रूप में ही रखा। जिस प्रकार बच्चे अधिकतर निर्वस्त्र रहते हैं उसी प्रकार वे भी नग्न ही थे। द्वारपालों ने उन्हें निरूद्देश्य एवं सामान्य बालक समझकर सातवें द्वार के अंदर प्रवेश करने से रोक दिया। शीघ्र ही भगवान के दर्शन प्राप्त करने की तीव्र इच्छा से चारों भाई महल के अंदर की ओर भाग रहे थे। लेकिन अकस्मात द्वारपालों के द्वारा रोके जाने पर उन्हें अपमान महसूस हुआ। द्वारपालों की धृष्टता से वे अत्यंत क्रोधित हो गये। सामान्यतः लोगों का कहना है कि संत पुरुषों को क्रोध एवं ईर्ष्या जैसे दोषों से मुक्त होना चाहिए। लेकिन भगवान की सेवा में बाधा पड़ने पर संत भी क्रोधित हो जाते हैं। यह उनकी अज्ञानता को नही दर्शाता है अपितु उनका भगवत प्रेम है। इन्द्रिय तृप्ति के कार्यों में बाधा पड़ने से सभी लोग क्रोधित हो जाते हैं। उनके क्रोध का कारण काम है। लेकिन भक्तों या संतों के क्रोध का कारण उनका भगवान के प्रति प्रेम होता है। भगवान से विशुद्ध प्रेम होने के कारण भक्त भगवान के प्रति अपनी प्रेम पूर्ण सेवाओं में किसी प्रकार की बाधा को सहन नहीं कर पाते हैं। उन चारों भाइयों को लगा कि द्वारपालों का व्यवहार वैकुण्ठ धाम के लिए उचित नहीं था और वे वहाँ रहने के योग्य नहीं थे। इसलिए ब्रह्मा जी के चार पुत्रों ने वैकुण्ठ के उन द्वारपालों को अपने पद से नीचे उतरने का शाप दे दिया।

विष्णु भगवान सातवें द्वार पर हुई घटना के बारे में ज्ञात होते ही वे तुरंत वहाँ पहुँचे। भगवान भाग्य की देवी लक्ष्मीजी के साथ आये और चारों भाइयों को उनके दर्शन प्राप्त हुए। सुंदरता एवं शक्तिपूर्ण भगवान को अपने समक्ष देख चारों भाई अत्यंत रोमांचित हो गये। भगवत धाम में प्रवेश करने से पहले ही भगवान के दर्शन प्राप्त करके उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उन्हें भगवान के दर्शन नेत्रों के लिए एक उत्सव एवं हृदय के लिए महान प्रसन्नता की तरह प्रतीत हो रहे थे। भगवान की दयापूर्ण दृष्टि ने उनके हृदय को स्पर्श करते हुए असीमित आनंद प्रदान किया। भगवान सुंदर माला पहने थे और उनके

भगवान भाग्य की देवी लक्ष्मीजी के साथ आये और चारों भाइयों को उनके दर्शन प्राप्त हुए। सुंदरता एवं शक्तिपूर्ण भगवान को अपने समक्ष देख चारों भाई अत्यंत रोमांचित हो गये। भगवत धाम में प्रवेश करने से पहले ही भगवान के दर्शन प्राप्त करके उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई।

वक्षःस्थल पर कौस्तुभ मणि सुशोभित था। चारों भाइयों ने तुरंत भगवान के चरण कमलों को दण्डवत प्रणाम किया। उस समय तुलसीदलों की सुगंध उनकी नाक में प्रविष्ट हो गई जिससे उनके हृदयों का दिव्य परिवर्तन हो गया। वे तुरंत शुद्ध भक्त बन गये। इस प्रकार निराकार भगवान की धारण को छोड़कर वे चारों भाई शुद्ध भक्ति के क्षेत्र में प्रविष्ट हो गये। वास्तव में वे भगवत प्रेम के गहरे सागर में डूब गये थे।

चारों भाइयों की उस ध्यान मग्न अवस्था में भगवान ने प्रसन्नता पूर्वक शुद्ध भक्तों का गुणगान किया और अपने दासों से हुई भूल के लिए क्षमा भी माँगी। उन्होंने स्पष्ट रूप से द्वारपालों के व्यवहार की निंदा करते हुए चारों भाइयों से द्वारपालों को शीघ्र वैकुण्ठ वापस आने का आशीर्वाद देने के लिए कहा। भगवान के अनुरोध पूर्ण स्वभाव ने चारों भाइयों को संकोच की अवस्था में डाल दिया और उन्हें द्वारपालों को शाप देने के कारण थोड़ी लज्ञा महसूस होने लगी। भगवान ने उनकी बेचैनी को समझते हुए उन्हे मधुर शब्दों के द्वारा सांत्वना दी। भगवान ने उनसे कहा कि जय एवं विजय नामक द्वारपालों के साथ जो भी हुआ वह स्वयं भगवान की ही इच्छा थी। भगवान ने आश्वासन भी दिया कि भौतिक जगत में शाप को पूर्ण करने के बाद वे शीघ्र ही वैकुण्ठ वापस आयेंगे।

उस शाप के कारण जय और विजय दोनों वैकुण्ठ से कुण्ठ लोक में पतित होकर दिति के गर्भ में प्रविष्ट हो गये। बाद में चारों भाइयों ने भगवान को नमन करते हुए विनम्रता पूर्वक उनकी परिक्रमा की। फिर भगवान के अपने स्थान पर जाने के बाद चारों भाई भी वैकुण्ठ से लौटे। द्वारपालों ने अपना पहला जन्म हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप की तरह, दूसरा जन्म रावण और कुम्भकरण की तरह तथा तीसरा जन्म शिशुपाल एवं दन्तवक्र की तरह लिया। उन सभी जन्मों में स्वयं भगवान द्वारा मृत्यु को प्राप्त करके वे शाप से मुक्त हो गये। तीनों जन्मों में भगवान से युद्ध करके भगवान के हाँथों में ही मृत्यु प्राप्त करने से वे शुद्ध हो गये और उन्होंने अपने मूल रूप को प्राप्त कर लिया। तब वैकुण्ठ वापस जाकर उन्होंने पुनः द्वारपाल का पद प्राप्त करके अपनी सेवा प्रारंभ कर दी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता- **प्रधान संपादक,**
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया

८३

श्रीमते रामानुजाय नमः

इसका भाव पहले ही कह चुके हैं। जब कि सच्चे मुमुक्षुओं के लिए मृत्यु का दिन शुभ दिन है तो समझदार मुमुक्ष रोग छुड़ाने के लिए श्री भगवान से प्रार्थना कैसे कर सकता है। इससे सच्चे मुमुक्षुओं को चाहिए कि किसी के भी कष्ट छुड़ाने के लिए न तो प्रार्थना करे न घबड़ाय; समयानुसार जो कुछ आवे उसको धीरता से सह

लेवे। बिरजा पार का एक परमपद ही है जो सदा के लिए नित्य है। वहाँ गये बिना यह आत्मा कभी सुखी नहीं हो सकता। वहाँ ही रहनेवाले महाप्रलय से बचते हैं बाकी चौदह लोक महाप्रलय में नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं उसमें रहनेवाले चेतन भी महा विपत भोगते हैं। इससे कालान्तर में नष्टभ्रष्ट हो जानेवाले इन चौदह लोकों के सुखों की चाहना न करे। कभी भी चौदह लोक की तो बात ही क्या है बिरजा नदी के बाद और परमपद के बहुत नीचे एक तरफ कैवल्य नामक लोक है जहाँ सिर्फ जीवात्मा के स्वरूप को साक्षात्कार चाहने वाले ही लोग भेजे जाते हैं। वे भी फिर कभी संसार में नहीं आते हैं परन्तु वहाँ सिर्फ आत्मा मात्र का ही अनुभव उन लोगों को होता है। वहाँ रहनेवालों के लिए एक महादोष यह है कि कभी भी परमपद में वे नहीं जा सकते। न उस लोक में साक्षात् रूप से कभी श्री भगवान ही जाते हैं। न कैवल्य में रहने वालों को उस दिव्य धाम में ही जाने लायक सामर्थ्य मिलता है। शास्त्रों के द्वारा सुख बिबर्जित मोक्ष उस स्थान को बताया गया है। यद्यपि उस लोक में भी जाने वाले जीव आवागमन से रहित हो जाते हैं परन्तु वहाँ परमात्मा सुख का अनुभव नहीं मिलने के कारण प्रिय परमात्मा के सेवा सौभाग्य से सदा के लिए वञ्चित रह जाने के कारण ये भाग्य हीन गिने जाते हैं, अपने प्राण प्रिय परमात्मा के कैंकर्य ही को परम फल परम शास्त्रों द्वारा समझने वाले सद्गुरु के कृपा पात्र महाभाग्यशाली सच्चे मुमुक्षु उस कैवल्य मोक्ष को भगवद् अनुभव से रहित होने के कारण महानरक तुल्य मानकर उसे नहीं चाहते हैं। किन्तु अल्प मति वाले ही चाहते हैं जैसे-

बिरजा परम व्योम्नोऽन्तर केवलंस्मृतम्।
तदिच्छंत्यल्प मतयो मोक्षं सुख विवर्जितम्।।

भाव यह हुआ कि बिरजा नदी और परमपद के बीच में किसी एक तरफ कैवल्य नामक एक लोक है उसको अल्पबुद्धि लोग इच्छा करते हैं। वह कैवल्य स्थान प्यारे परमात्मा के अनुभव से जो अपार सुख का आकर है उससे बिबर्जित

है। महात्माओं! जब कि पहुँचे हुए मुमुक्षु परमात्मा की सेवा से रहित होने के कारण कैवल्य को नहीं देखना चाहते हैं तो महाप्रलय के अग्नि में जलकर नष्ट भ्रष्ट हो जानेवाले चौदह लोक की चाहना कैसे करेंगे। भारत में लिखा है कि-

एते वै निरयास्तात स्थानस्य परमात्मनः।

भाव यह भया कि ''आर्ष्टिसेन'' नाम वाले किसी मुमुक्षु से एक कोई मुनिराज कह रहे हैं कि जहाँ साक्षात् होकर अपने नित्य परिकरों के साथ परमात्मा सदा बिराजते हैं, जहाँ महाप्रलय कभी नहीं पहुँचता है, जहाँ के रहने वाले बड़भागी चेतन कभी भी संसार दुःख को भोगने नहीं आते हैं, जहाँ रहने वाले चेतनों को परमात्मा की सेवा का, अनुभव का अपार सुख प्राप्त होता है, उसी दिव्यधाम का नाम परमपद है। वह श्री बिरजा नदी के उस पार है। उसी को त्रिपाद्विभूति कहते हैं। वह इतना रमणीय और मनोहर है कि उस दिव्यधाम के सामने यह चौदह लोक और चौदहलोकों का सुख नरक के समान है। इससे अधिक मैं ज्यादा नहीं कह सकता। उस परमपद में पहुँचने वाले चेतन सदा के लिए सुखी हो जाते हैं। उन्हें फिर भी संसार में या संसार के जन्म-मरण चक्र में कभी भी आना नहीं पड़ता। वहाँ गये बिना यह जीव कभी सुखी हो ही नहीं सकता। इससे सच्चे समझदार मुमुक्षु लोग परमात्मा से उसी को चाहा करते हैं। सच्चे मुमुक्षु तो बिरजा के नीचे के ब्रह्माण्ड में रहने वाला जो वैकुण्ठ है उसको भी परमात्मा से नहीं चाहना करते हैं। इस ब्रह्माण्ड में रहने वाला जो वैकुण्ठ है इसमें तो कोई मुनि, श्री भगवान के दर्शन के निमित्त चले भी जाते हैं संसार में आभी जाते हैं। जिसे सनकादिक मुनि श्री भगवान के दर्शन को गये थे और फिर भी दर्शन करके आगये। भृगु मुनि गये थे अपना कार्य करके आगये। यह वैकुण्ठ प्रकृति मंडल के अन्तर्गत है। स्वर्गादि लोक से विशेष जरूर है कि महा प्रलय के समय नष्ट-भ्रष्ट नहीं होता। श्री भगवान के इच्छा से श्री भगवान के श्री विग्रह के समान अन्तर्ध्यान हो जाता है। जैसे भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण रूप से प्रकृति मण्डल में

यह वैकुण्ठ प्रकृति मंडल के अन्तर्गत है। स्वर्गादि लोक से विशेष जरूर है कि महा प्रलय के समय नष्ट-भ्रष्ट नहीं होता। श्री भगवान के इच्छा से श्री भगवान के श्री विग्रह के समान अन्तर्ध्यान हो जाता है। जैसे भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण रूप से प्रकृति मण्डल में आते हैं तो भी प्राकृत मनुष्यों के समान गर्भ में यथार्थतः नहीं रहते हैं, न प्राकृत लड़कों के समान उनका जन्म होता है किन्तु दिव्य किशोर मूर्ति प्रगट हो जाते हैं फिर लोक दिखाऊ बालक हो जाते हैं। अन्त में भी प्राकृत मनुष्यों के समान उनका जाना नहीं होता है।

आते हैं तो भी प्राकृत मनुष्यों के समान गर्भ में यथार्थतः नहीं रहते हैं, न प्राकृत लड़कों के समान उनका जन्म होता है किन्तु दिव्य किशोर मूर्ति प्रगट हो जाते हैं फिर लोक दिखाऊ बालक हो जाते हैं। अन्त में भी प्राकृत मनुष्यों के समान उनका जाना नहीं होता है। ब्रह्मादिक देव आकर स्तुति करते हैं, फूलों की वर्षा वर्षाते हैं, फिर भगवान उसी श्री विग्रह से अन्तर्ध्यान हो जाते हैं और जहाँ कहीं भी सामान्य रूप से प्रादुर्भाव और प्राकृत मनुष्यों के समान अन्तिम प्रसंग लिखा हो, वह अच्छे समझदार मुमुक्षुओं के लिए मान्य नहीं है। उसको भगवत विमुख ही आसुरी प्रकृतिवाले जीवों को व्यामोह डालने के लिए ही जानना चाहिए। जैसे प्रकृतिमण्डल में आने पर भी श्री भगवान के पूर्णावतारों का प्राकृत जीवों के समान जन्म मरणादिक न होकर आविर्भाव तिरोभाव ही होता है, उसी प्रकार प्रकृति मण्डल में रहने पर भी श्री वैकुण्ठ लोक का आविर्भाव तिरोभाव ही होता है। इस प्रकृति मण्डल का जो श्री वैकुण्ठ लोक है उसकी रचना ब्रह्म के द्वारा नहीं होती। जब ये ब्रह्माण्ड तैयार किया जाता है तो ब्रह्मलोक से ऊपर बहुत दूर ऊँचे पर परमात्मा अपने इच्छा मात्र से श्री वैकुण्ठ लोक को प्रगट कर देते हैं और उसी में अपने नित्य पार्षदों के साथ एक रूप से वहाँ विराजते हैं। (क्रमशः)

भगवद्गीता और नौजवान

बुद्धि नाश से विनाश

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

भगवान से मिली बुद्धि के प्रयोग से लाभकारी कार्यों को करने वाला व्यक्ति इतिहास रच कर एक सम्मानित स्थान प्राप्त करता है। इस प्रकार वह एक वास्तविक पूज्यनीय व्यक्ति बनता है। लेकिन इसके विपरीत, विनाशकारी कार्यों को करने वाला व्यक्ति उपद्रवी एवं पापी कहलाता है। अर्थात् एक व्यक्ति का गौरान्वित होना या उसे अस्वीकार किया जाना उसकी बुद्धि पर ही निर्भर होता है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त हुए विवरण को सूचना, मस्तिष्क में संचित की हुई सूचना को ज्ञान तथा व्यवहारिक ज्ञान को बुद्धि कहते हैं। बुद्धि का उचित प्रयोग करने की विभेदात्मक शक्ति ही संचित बुद्धिमत्ता कहलाती है। इन सभी कार्यों का मूल केंद्र विज्ञानमय कोष है जिसे सामान्य रूप से बुद्धिमत्ता या बुद्धिलब्धि (इंटेलिजेन्स कोशेन्ट-आई.क्यू) कहा जाता है। एक ओर अपनी बुद्धिमत्ता के सदुपयोग से कृत्रिम उपग्रहों को रॉकेट के द्वारा अंतरिक्ष में पहुँचाने वाले वैज्ञानिक हैं, तो दूसरी ओर बुद्धिमत्ता का दुरुपयोग करके जन जीवन में आतंक पैदा करने वाले आतंकवादी भी हैं। हमारे अस्तित्व में शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा है। पूर्व निर्धारित क्रमानुसार इनमें आत्मा का पद सर्वोच्च है और उसके नीचे बुद्धि है। मन का स्थान बुद्धि से नीचे एवं शरीर पदक्रम में सबसे नीचे होता है। एक व्यक्ति की इस पदक्रम में दूसरे स्थान पर स्थित बुद्धि का सर्वोच्च स्थान वाली आत्मा से संयोग होने पर वह मानव कल्याण के कार्यों को करता है। लेकिन बुद्धि का संयोग तीसरे स्थान पर स्थित मन से होने पर वह व्यक्ति आत्म विनाश या सामूहिक विनाश वाले कार्यों को करता है। भगवद्गीता में सभी को यह संदेश दिया गया है।

बुद्धि नाश ही विनाश का कारण है। भगवद्गीता में भली प्रकार बताया गया है कि बुद्धि नाश का आरंभ कैसे होता है। इन्द्रियविषयों का चिन्तन करते हुए मनुष्य की उनमें आसक्ति उत्पन्न हो जाती है और ऐसी आसक्ति से काम उत्पन्न होता है और फिर काम से क्रोध प्रकट होता है। क्रोध से पूर्ण मोह उत्पन्न होता है और मोह से स्मरणशक्ति का विभ्रम हो जाता है। जब स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है, तो बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य भव-कूप में पुनः गिर जाता है। (भगवद्गीता २.६२ एवं २.६३)

हमें बुद्धि नाश एवं उससे होने वाले मनुष्यों के पतन की ऐसी यथार्थ व्याख्या अन्य किसी शास्त्र में नहीं मिलती है। यदि हम ध्यान से देखें तो समाज द्वारा अस्वीकृत तथा जेलों एवं अस्पतालों में पहुँचे सभी व्यक्तियों के लिए यह व्याख्यान सत्य है। समाज के अनेक कथानक गीता के इस व्याख्यान के अच्छे उदाहरण हैं। पागलपन के कारण एक युवक द्वारा एक जवान लड़की की हत्या या तेजाब द्वारा उसके चेहरे को विकृत करने जैसी घटनाओं का कारण गीता के इस

जीवन के लक्ष्यों का स्पष्टता पूर्वक अवलोकन करने, उन पर केन्द्रित रहने एवं आत्मा की असीमित शक्ति से भरे होने पर सभी युवा सरलतापूर्वक सफलता की चोटी तक पहुँच सकते हैं।

संदेश के द्वारा समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक युवक के एक जवान लड़की की ओर आकर्षित होने पर वह आकर्षण लड़की के प्रति लगाव को बढ़ाता है। उस लगाव से काम की उत्पत्ति होती है अर्थात् उसकी लड़की के प्रति काम की इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं। यदि लड़की उसके प्रेम को अस्वीकार करती है तो उस युवक को क्रोध आता है जिससे वह भ्रमित हो जाता है। भ्रमित होने का अर्थ है पूर्ण अंधकार की वह स्थिति जिसमें मनुष्य की विभेदात्मक शक्ति का अंत हो जाता है और उसकी स्मृति नष्ट हो जाती है। ऐसी अवस्था में वह युवक अपने सामाजिक स्तर, भविष्य एवं परिवार के सम्मान आदि को भूल जाता है। इसे स्मृति का नष्ट होना कहा जाता है। इस प्रकार स्मृति के नष्ट होने से बुद्धि का विनाश हो जाता है जिससे वह युवक उस जवान लड़की को मारने या उसके चेहरे पर तेजाब डालने जैसे भयानक पाप कर्मों को करता है। ऐसे जघन्य पाप कर्म उसे जेल तक ले जाते हैं और पूरा समाज उसकी अवहेलना करता है। इस प्रकार आकर्षण की कहानी अंततः उसे जेल तक पहुँचा देती है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने इसे ''बुद्धिनाशात्प्रणश्यति'' कह कर बताया है। प्रारंभिक विकास की अवस्था में सुरक्षित रहने के लिए युवाओं को अस्थायी कारणों एवं वस्तुओं से आकर्षित नहीं होना चाहिए। इससे किसी बाधा के बिना उनकी बुद्धि का अच्छा विकास होता है। उनका आकर्षण केवल शिक्षा एवं जीवन के उच्चतर लक्ष्यों की ओर होना चाहिए। यह तभी संभव होगा जब वे चेतना शक्ति अर्थात् आत्म शक्ति से परिपूरित होंगे। जीवन के लक्ष्यों का स्पष्टता पूर्वक अवलोकन करने, उन पर केन्द्रित रहने एवं आत्मा की असीमित शक्ति से भरे होने पर सभी युवा सरलतापूर्वक सफलता की चोटी तक पहुँच सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि चंदादारों के लिए सूचना

सप्तगिरि मासिक पत्रिका पाठकों को हर महीने सही ढंग से पहुँचाने के लिए विविध क्रियाकलाप कार्य कर रहे हैं विषय पाठकगण समझ सकते हैं। इसी विषय के दौरान भक्तों का पता क्रमबद्ध करने के लिए कार्यवाहीन चर्याये लेते है। पाठकगण इस विषय को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित प्रकार अपना संबंधित विवरण प्रधान संपादक कार्यालय को सूचित कीजिए।

१. 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के बारे में सुझाव/सूचनाएँ/शिकायतों को sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा सूचित कीजिए।

२. सप्तगिरि चंदादारों का पता क्रमबद्ध कराने के लिए ०८७७-२२६४५४३ फोन नंबर को चंदादार फोन करके अपना पूरा पता, पिन कोड, मोबाइल नंबर जैसे विवरण कार्यकालीन (सुबह १०.३० से सायं ५.०० के अंदर) समयों में संपर्क करें।

३. उपरोक्त फोन नंबर या वेबसैट sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा भी अपने विवरण को बता दे सकते हैं।

४. आनलॉइन चंदादार अपने पूरे पते के संबंधित विवरण ति.ति.दे. वेबसैट के द्वारा बता दें।

प्रधान संपादक,

सप्तगिरि कार्यालय, तिरुपति।

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

अडैयार् कमल त्तलर्महळ् केळ्वन्, कैयाळि येन्नुम्
पडैयोडु नान्दकमुम् पडर् तण्डुम्, ओण्शांर्ङ्ग विल्लुम्
पुडैयार् पुरिशंगमुम् इन्द प्पूतलम् काप्पदर्क्केनु
इडैये यिरामानुज मुनियायिन विन्निलत्ते॥३३॥

पद्मवनालयायाः श्रियःपत्यु; पाणितले विराजमाना सुदर्शननन्दककौमोदकीशांर्गपाञ्जजन्याभिधाना पञ्चायुधी भूतलपालनाय भगवद्रामानुज मुनिमाविवेश॥ (शेषावतारत्वेन प्रसिद्धस्यापि सतो रामानुजार्यस्य अत्र पञ्चायुधांशत्वेन अन्यत्र विष्वक्सेनावतारत्वेन च कथनं प्रभावातिशयानुगुणमिति ध्येयम्। अत्र सुबहु वेदितव्यमस्मदीय शेषावतारच्चिरप्पुनाम्नि द्राविड निबन्धेऽनुसन्धेयम्)

आप साक्षात पंचायुधों के अपरावतार हैं। यद्यपि श्री स्वामीजी को शेषावतार मानना ही प्रमाण-सम्मत है। तथापि आपके प्रभावों का अनुसंधान करने वाले महान लोग आपके विषय में ऐसे नानाप्रकार के उल्लेख करते हैं।

सुंदर दल परिपूर्ण कमलपुष्प में अवतीर्ण श्री महालक्ष्मी के वल्लभ भगवान के श्री हस्त में विराजमान श्री सुदर्शन चक्र, नंदक खड्ग रक्षण करने में निरत गदा, सुंदर शारंग धनुष और मनोहर श्री पांचजन्य शंख, ये सब (पंचायुध) इस भूतल की रक्षा करने के लिए श्री रामानुज स्वामीजी में आविष्ट हो गये; (अथवा श्री रामानुज स्वामीजी के रूप में अवतीर्ण हो गये)। (विवरण- इस गाथा का दो प्रकारों से अर्थ हो सकता है - श्री रामानुज स्वामीजी में पंचायुधों की भी शक्ति पूर्ण है; अथवा आप साक्षात पंचायुधों के अपरावतार हैं। यद्यपि श्री स्वामीजी को शेषावतार मानना ही प्रमाण-सम्मत है। तथापि आपके प्रभावों का अनुसंधान करने वाले महान लोग आपके विषय में ऐसे नानाप्रकार के उल्लेख करते हैं कि आप कदाचित् विष्वक्सेनजी का अथवा भगवान के पांचों आयुधों का अवतार होंगे इत्यादि। इस विषय की विस्तृत चर्चा ''शेषावतारच्चिरप्पु'' नामक द्राविडीग्रंथ में की गयी है।

(क्रमशः)

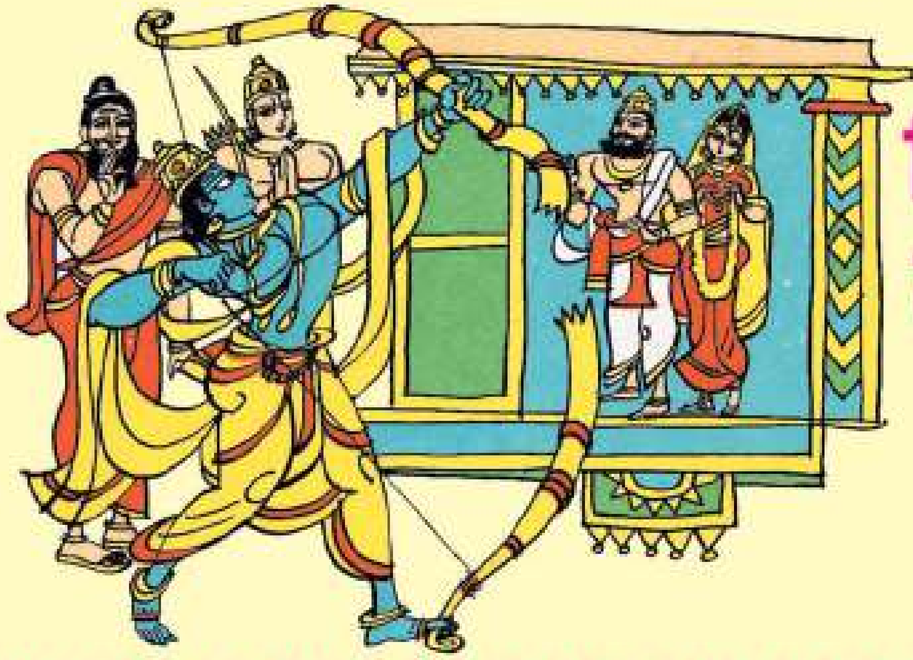

शिव-धनुष तोड़ने का मतलब

- श्रीमती वी.केदारम्मा

"रुद्र नामक शब्द का मुख्य अर्थ रुलानेवाला है। "रोदयति इति रुद्रः" - कहा गया है। यह भावना करके कि किन्ही वस्तुओं पर अपना सारा सुख आधारित है - उन्हे पाने मानव छटपटाता है। अगर वे मिले तो आनन्दित होता है, न मिले तो पीड़ा का अनुभव करता है। यह, वस्तुओं की गलती नहीं हैं। मन और इन्द्रियों की कामनाओं के कारण से ही हम उन वस्तुओं को पाना चाहते हैं। "बृहदारण्यक उपनिषत" बताता है कि मन और इन्द्रिय ही मानव को रुलाते हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ तथा चर्म) तथा पाँच कर्मेंद्रियों (हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ वाक्पाणि पादपायूपस्थ) का अधिपति मन है। इन ग्यारह चीजों को मिलाकर "एकादश रुद्र" कहते हैं। इन्हे सुख प्राप्त हो जाय तो मानव सन्तोष के साथ रहता है; नहीं तो रोदन करता है। बुढ़ापे में इन्द्रिय क्षीण होने पर वे ही हमें रुलाते हैं। ये रुद्र याने इंद्रिय और मन प्रशान्त रहने का रूप ही शांतरूप या "शिव स्वरूप" है। व्याकुल मन तथा कामनाओं से पीड़ित इन्द्रिय हों तो वह "घोर रूप" है। इसीलिए रुद्र के घोर और अघोर (शान्त); दो रूप हैं; ऐसा हम "रुद्रं" में देखते हैं। "अपने घोर रूप को पीछे की तरफ़ पलटा दो और शिव स्वरूप दिखा दो; "ऐसा हम प्रार्थना करते हैं। वैदिक साहित्य में मन की तुलना धनुष से की गयी है। इन्द्रिय ही बाण हैं। अपने धनुष की प्रत्यंचा को ढीला करके अपने बाणों को एक तरफ़ रख दो; ऐसा हम प्रार्थना करते हैं। मन और इंद्रियों को ठीक रास्ते पर चलाने के लिए की जानेवाली प्रार्थना यह है।

शिव-धनुष तोड़ने का वेदान्त परक अर्थ है- मन और इंद्रियों पर उन्होंने विजय पायी। शिव ने भी मन्मथ को दग्ध करने के पश्चात् ही... याने काम (कामवासनाओं; कामनाओं) पर विजय प्राप्त करने के बाद ही पार्वती से विवाह कर लिया; ऐसा हम को जानना चाहिए। विवाह केवल काम से संबंधित नहीं है; एक पवित्र समझौता है; ऐसा इसका अन्तरार्थ है।

श्रीराम ने अपने विवाह से पहले शिव-धनुष तोड़ा। इसका वेदान्त परक अर्थ है- मन और इंद्रियों पर उन्होंने विजय पायी। शिव ने भी मन्मथ को दग्ध करने के पश्चात् ही... याने काम (कामवासनाओं; कामनाओं) पर विजय प्राप्त करने के बाद ही पार्वती से विवाह कर लिया; ऐसा हम को जानना चाहिए। विवाह केवल काम से संबंधित नहीं है; एक पवित्र समझौता है; ऐसा इसका अन्तरार्थ है।

स्वस्ति

तेलुगु मूल - श्री के.अरविंद राव।

साभार - आन्ध्रज्योति (दैनिक)।

'धर्म' जीवन की शक्ति है

- श्री अंकुश्री

धर्म व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण की एक पद्धति है। इससे पूरी धरती और सृष्टि संचालित होती है, धार्मिक व्यक्ति अधिक स्वस्थ और निरोग रहता है। जो व्यक्ति अपना धर्म भूल जाता है, पतन की ओर अग्रसर होने में उसे देर नहीं लगती। धर्म की प्रक्रिया ठीक वैसी है, जैसी प्रकृति की प्रकृति द्वारा प्राकृतिक धर्म को भूल जाने के बाद प्राकृतिक विनाश लीलाएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

पृथ्वी का धर्म दैनिक और वार्षिक गति में घूमना है। सूर्य का धर्म प्रकाश फैलाना और ताप विसर्जित करना है। ब्रह्माण्ड में जितने तारे और पिण्ड दिखते हैं, उनका धर्म गति के अनुसार अपने परिक्रमा-पथ पर टिके रहना है। उनमें से किसी द्वारा भी अपने धर्म-पथ से विचलित हो जाने पर सृष्टि में विनाश लीलाएँ उत्पन्न हो जाती है। इतिहास साक्षी है कि पृथ्वी पर उल्का पिण्डों के गिरने जैसी विनाश-लीलाएँ हो चुकी हैं।

प्रकृति हमें अपने धर्म पर टिके रहने की शिक्षा पग-पग पर देती है। पौधों का धर्म है फलना-फूलना और प्राणियों का धर्म है उसका उपयोग करना। कुछ प्राणियों का दूसरे प्राणियों पर आश्रित रहना उसका धर्म है। मानव का धर्म है जीवनपर्यन्त किये गये भोग से अधिक देकर जाना। जो जितना लेता है, उससे कम देने पर वह ऋणि कहलाता है। मानव-जीवन में उम्र, लिंग और क्षमता के अनुसार धर्म भी अलग-अलग है। शिशु का धर्म है रोना; ताकि माता का ध्यान उसकी ओर बना रहे और वह जीवन का आवश्यक तत्त्व अपनी माता का दूध प्राप्त करता रहे। शौच के बाद भी शिशु रोदन-धर्म द्वारा अपनी माता का ध्यान आकर्षित करता है।

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, धर्म का स्वरूप भी बदलता जाता है। जागना-सोना, पढ़ना-खोलना, जीवकोपार्जन, स्वयं और परिवार की सुरक्षा, आध्यात्मिक चिंतन और पूजा-पाठ आदि मानव के धर्म है। इसके लिये वह अनेक प्रकार के कर्तव्य करता है।

धर्म और कर्तव्य के बीच में तरह-तरह की बाधाएँ आती हैं। इन बाधाओं को झेलकर भी तारतम्यतापूर्वक उनसे बाहर निकल जाने वाला व्यक्ति सफल कहलाता है। लेकिन ठीक इसके विपरीत बाधाओं में उलझ कर

रह जाने वाले व्यक्ति को असफलता हाथ लगती है। इसलिये बादाओं से घबराने या विचलित होने के बजाये मानव का यह धर्म है कि वह धैर्यपूर्वक कर्तव्य कर उन बाधाओं से निपटने का प्रयास करे।

मनुष्य का धर्म प्रकृति-प्रदत्त है। लेकिन उसे इसका पूर्ण ज्ञान नहीं होता। इस ज्ञान को पूर्णता प्रदान करता है सत्संग। परिस्थिति के अनुसार सत्संग आवश्यक है। जन्म के समय माता का सत्संग मिलता है। इसी क्रम में उसे धार्मिक गुरु का भी सत्संग मिलता है। सत्संग में विचारों का आदान-प्रदान होता है और इससे धार्मिक ज्ञान बढ़ता है। इस कार्य को गुरु बड़ी सहजतापूर्वक पूर्ण कर देता है। गुरु-शिष्य की परम्परा इसी का परिणाम है, जो धर्म का आधार है।

किन्तु गुरु, विशेष कर सद्गुरु का मिलना एक सामान्य प्रक्रिया नहीं है। बहुत प्रयास और तलाश के बाद भगवद्कृपा से सद्गुरु का मिलना संभव हो पाता है। गुरु के मिलने पर धर्म-निर्वहण की सारी बाधाओं को दूर करने का मार्ग मिल जाता है। जीवन की समस्याओं में उलझ कर निष्क्रियता की ओर अग्रसर हो चुका मनुष्य भी सक्रियता की ओर अग्रसर होने लगता है।

लेकिन धर्म-गुरुओं से सावधान रहना भी आवश्यक है। कुछ गुरु शिष्यों की आस्था का गलत उपयोग करने लगते हैं। ऐसे गुरुओं के प्रति उनके शिष्यों के मन में जब तक अनास्था उत्पन्न होती है, तब तक बात बिगड़ चुकी होती है। ऐसे में भी कुछ शिष्य तो सावधान होकर हट जाते हैं, मगर अधिकतर शिष्य और उलझ जाते हैं। लालची शिष्यों के साथ ऐसा अधिक होता है। परिणामतः उनके धर्म का सारा स्वरूप बिगड़ जाता है। इसलिये विवेक के साथ ही धर्म आगे बढ़ सकता है।

गुरु-शिष्य परम्परा का स्वरूप विभिन्न धर्मों में अलग-अलग है। कुछ धर्म-गुरुओं द्वारा धर्मान्तरण की प्रक्रिया भी अपनायी जाती है। इस कार्य में प्रत्यक्ष रूप से लगे हुए लोगों के बारे में कामावेश जानकारी प्रायः होती रहती है। किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से लगे हुए लोगों के प्रति सावधान हो पाना थोड़ा कठिन कार्य है। ऐसे तथाकथित गुरु दूसरे और सही धर्म-गुरुओं की वेश-भूषा और भाषा का प्रयोग कर अबोध लोगों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे धर्म-गुरुओं से स्वयं तो सावधान रहना ही चाहिये, उनसे दूसरों को भी बचाना हमारा धार्मिक कर्तव्य है।

धर्मानुसार किये गये कर्तव्यों से मनुष्य को आत्म संतुष्टि मिलती है, जिससे उसे स्वतःस्फूर्त शक्ति प्राप्त होती है। उसकी यह शक्ति धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। उसके बाद वह शक्ति मनुष्य को सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर कर देती है, जो जीवन की सफलता और उपलब्धि है। ऐसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति संतुष्ट और शांत रहती है। जिससे वह स्वस्थ और निरोग भी रहता है।

सूचना

१. कल्याणकट्टा के कर्मचारियों को कोई भेंट मत दीजिए।

२. पानी को व्यर्थ न बहायें।

३. तीन मुट्ठिभर केश कटवाने के लिए कृपया ब्लेड मत लीजिए। केवल शिरोमुंडन करवानेवाले ही ब्लेड और चंदन लीजिए।

४. ब्लेड और चंदन श्रीहरि की संपदा है, व्यर्थ न करें।

५. जूते पहनकर अंदर प्रवेश करना मना है।

६. कल्याणकट्टा में छायाचित्र व वीडियो खींचना मना है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

'श्रीवारि सेवकों' के लिए मार्गदर्शक नियम

श्री बालाजी की 'श्रीवारि सेवा' में एक सप्ताह की अवधि के लिए कम से कम दस व्यक्तियों का समुदाय भाग ले सकता है। निःस्वार्थ सेवायें प्रदान करने के लिए इन व्यक्तियों को आध्यात्मिक ज्ञान के होने की आवश्यकता है। लिंग भेद नहीं है। इच्छुक व्यक्ति उनका नाम, पता, आयु, लिंग, व्यवसाय, फोन या मोबाइल नंबर और स्टांपसैज छायाचित्र आदि विवरण को एक महीने अग्रिम इस पते पर भेजें – **'प्रजासम्पर्काधिकारी, तिरुमल तिरुपति देवस्थान, के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०१.' अन्य विवरण केलिए संपर्क करें- ०८७७-२२६३५४४, २२६३२९३.**

- श्रीवारि सेवा में भाग लेने वाले समूह का नेता या संयोजक सेवकों के पूरे विवरण तिरुमल में स्थित श्रीवारि सेवासदन में देना होगा।
- श्रीवारि सेवक अपने साथ बच्चे, वृद्ध व रोगियों को न लायें। अगर कोई लाये, तो उनको सेवा करने की अनुमति नहीं दी जाती है।
- श्रीवारि सेवासदन में सेवकों को आइ.डी.कार्ड देकर, कार्यस्थान के बारे में सूचना देते है। सेवकों को प्रतिदिन कम से कम छः घंटों तक सेवा में कार्यरत होना होता है।
- प्रतिदिन सुबह ९.०० बजे से १०.०० बजे तक एवं सायं ६.०० बजे से ७.०० बजे तक भजन, सत्संग और प्रशिक्षण दी जायेंगी। जो सुबह के श्रीवारि सेवा में कार्यरत रहते हैं उनको शाम की कक्षाओं में तथा शाम को जो सेवारत रहते हैं उनको सुबह की कक्षाओं में उपस्थित रहना होता है।
- तिरुमल के आर.टी.सी. बस स्टैण्ड में स्थित श्रीवारि सेवासदन कार्यालय में कार्यरत विशेषाधिकारी या ए.इ.ओ. के सामने अपने को निर्धारित तारीख की सुबह १०.०० बजे से सायं ५.०० बजे के बीच में उपस्थित होना चाहिए।
- सेवासदन में सेवकों को मुफ्त में आवास दिया जायेगा। पुरुषों को सेवासदन में, स्त्रियों को पी.ए.सी-III में आवास दिया जायेगा। लॉकर को ताला लगाने के लिए सेवक अपने साथ ताला एवं चाबियों को स्वयं ले आना होगा।
- सेवा में कार्यरत व्यक्ति ही गले में दुपट्टा ओढें। भगवान के दर्शन के लिए या अन्य प्रान्त को जाते समय इसे ओढने की आवश्यकता नहीं है।
- सदा गोविंद नाम का जप करें। भक्तों के साथ 'गोविंदा, गोविंदा' का उच्चारण करते हुए प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
- यात्रियों की सहायता के लिए यह स्वैच्छिक सेवा रखी गई है। किसी को भी (वृंद नेता या कर्मचारि को) धन, वस्तु रूपेणा कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं है। यह सेवा बिल्कुल मुफ्त है।
- हिन्दूधर्मावलंबी ही श्रीवारि सेवक होने लायक हैं।
- हिन्दू सम्प्रदाय के अनुसार हर एक श्रीवारि सेवक को तिरुनाम/ तिलक व कुंकुम/चंदन की टिकया (बिंदियाँ) लगाना अनिवार्य है।
- भक्तों में भगवान श्रीनिवास को दर्शन कराते हुए श्रीवारि सेवक अंकित भाव से कार्य करें।
- श्रीवारि सेवकों को उनके निर्देशित प्रांत में मात्र ही सेवा करना होगा। गर्भालय में सेवा करना जरूरी नहीं है। उसके लिए दबाव मत डालें।
- श्रीवारि सेवासदन और पी.ए.सी-III में रहे शौचालय को स्वच्छ रखें। आवास में पानी और बिजली को वृथा न करें।
- सेवासदन में ठहरने वाली महिलाओं को नैट गौन (Night Gown, Nighties) पहनना, पुरुष सेवकों को षार्टस (Shorts) पहनना मना है।
- श्रीवारि सेवा में निर्देशित नियमों का किसी कारणवश श्रीवारि सेवक उल्लंघन करें, तो उनको दो वर्षों तक सेवा में भाग लेने के लिए अनुमति नहीं दी जायेगी।
- सेवासदन और पी.ए.सी (यात्रि सुविधा केन्द्र) में श्रीवारि सेवकों की कार्यकलाप को दो या तीन श्रीवारि सेवा संयोजक पर्यवेक्षण करेंगे। कृपया इन्हें सहयोग दें।
- श्रीवारि सेवा में भाग लेने के लिए उत्साही व्यक्ति ऑनलाइन द्वारा आरक्षण कर सकते हैं। "www.tirumala.org" वेबसैट में श्रीवारि सेवा नामक लिंक के द्वारा सेवा के लिए आरक्षण कर सकते हैं।
- श्रीवारि सेवकों को अनिवार्य रूप से आधार कार्ड (ओरिजिनल एवं जीराक्स की प्रतियाँ) ले आना पडेगा। अगर आधार कार्ड प्रस्तुत किया नहीं जाता, तो सेवा में भाग लेने की संभावना नहीं होती है।
- श्रीवारि सेवा वृंद का नेतृत्व करनेवाले को निजी रूप से जान पहचान के लोगों को ही अपने साथ, सेवा के लिए आना होगा। सेवा वृंद के सदस्यों से अगर कोई भूल हो जाती है, तो इसका पूरा दायित्व नेता का ही होगा।
- सेवा में प्रस्तुत होनेवाले सदस्यों को तिरुमल तक ले आने तथा पुनः उनके स्वस्थल पहुँचाने की पूरी जिम्मेदारी वृंद नेता की ही होती है।
- आजकल ऑनलाइन में तीन दिनों के लिए (२५ से-४० आयु तक) चार दिनों के लिए या सात दिनों के लिए (१८ से-६० की आयु तक) श्रीवारि सेवा कर सकते हैं।

निर्देशित वस्त्रधारण - पुरुष - सफेद (धोती, उत्तरीय, कुर्ता, पायजामा)

स्त्रियाँ - लालवर्ण किनारे से युक्त केसरिया वर्ण की साडी, लाल वर्ण किनारे युक्त अंगि(चोली) (या) केसरिया रंग का कुर्ता, लाल वर्ण पायजामा, लाल वर्ण दुपट्टा का पहनना अनिवार्य है।

हमारे मंदिर

तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी

तेलुगु मूल - श्री गोपीकृष्ण

हिन्दी अनुवाद - डॉ.जे.सुजाता

'दही का घडा, मंथाद्रि'। 'तरिकुंडा' में दिखाई देनेवाला तरिगोंडा सालग्राम नृसिंह भगवान। एक कहानी के अनुसार- रायदुर्गम् नामक गाँव में अकाल पडने पर, पशुवों की चारा के लिए, उनको लेकर आये आप्रवासित 'रामानयनिंवारु' नामक पाले प्रत्तिमिट्टा पालनूई प्रान्त के जलाशय के पास, श्री लक्ष्मीनरसिंह स्वामी सपने में आकर, अपना मंदिर का निर्माण करने के लिए कहकर, मंदिर बनवाया है। इसके पहले, 'रामारायनि' की पन्ती लक्ष्मीनरसम्मा घट में छाछ मंथन करते समय उस घडी में 'लक्ष्मीनरसिंह स्वामी' सालग्राम के रूप में मिले, उसे मंदिर में प्रतिष्ठित करने के लिए कहा। स्वामीजी स्वप्न के आदेश के अनुसार, गाँव के मुखिया लोग पृथ्वी से खुदाई करके स्वामी की मूर्ति को निकालकर, लक्ष्मीनृसिंह स्वामी का मंदिर बनवाकर उसमें मूर्ति को प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार तरिगोंडा में लक्ष्मीनृसिंह स्वामी ने विराजित हुआ।

वायल्पाडु (वाल्मीकिपुरम्) से गुर्रम्कोंडा जानेवाले रास्ते के बीच पाँच - छे कि.मी. के दूरी पर 'तरिगोंडा' स्थित है। इस गाँव में 'वेंगमांबा' जन्म लेकर, गाँव का नाम 'तरिगोंडा'' को ख्याति मिलती है। इस मंदिर में तीन शासन उपलब्ध हैं। पहला ई.सन् १५५९, विजयनगर चक्रवर्ती सदाशिवदेव महारायलु का है। इस शासन में राजा की अनुमति तथा, महामंडलेश्वर रामराजदेव महाराय की स्वीकृति से जिल्लेला वेंगलराजदेव महाराज मंगलि जी के कर कम करना आदि के बारे में है। इससे पता लगता है कि यह मंदिर ई.सन् १५५९ समय में ही है। दूसरा शासन ई.सन् १८४६ साल में गुरु भास्कराचार्य के शिष्य एर्रप्पा ने होमशाला तथा पाकशाला का निर्माण किया। तीसरा शासन ई.सन् १८६२ का है। कृष्णमसेट्टी ने लक्ष्मीनृसिंहस्वामी के लिए कल्याण मण्डप (विवाह मंच) का निर्माण किया। ये सब शासन होने के बावजूद, जिसने मंदिर का निर्माण किया, उसका नाम उपलब्ध नही है। कुलमिलाकर यह मान सकते है कि इस मंदिर का निर्माण १६वें शताब्दी में हुआ है। मंदिर को बनानेवाला, तदुपरान्त गाँव का निर्माण करनेवाला रायदुर्गम् रामानायनिंवाले कहने में कोई निर्विवादांश नही है।

कहाँ रायदुर्गम्? कहाँ तरिगोंडा? पशु संरक्षण निमित्त आप्रवासित होकर यहाँ स्थायी रूप से रहना, रामानायनि

की पत्नी लक्ष्मीनरसम्मा छाछ मंथन करते समय, उसमें सालग्राम का मिलना, मालिक को स्वप्न में नरसिंहस्वामी प्रकट होकर, अपनी मूर्ति को पृथ्वी से खोद निकालकर, मंदिर बनवाकर उसमें प्रतिष्ठित करने को कहना, मंदिर को निर्मित समय धनराशियों का मिलना, सुचारू रूप से नीचे कुआँ के साथ मंदिर का निर्माण पूरा होना, उसमें लक्ष्मीनरसिंह स्वामी, उनके बगल सालग्राम की प्रतिष्ठापन, तरिगोंडा नाम से गाँव का बनना, स्वामी भी स्वयं 'तरिगोंडा लक्ष्मीनृसिंह स्वामी' के नाम से जाने जाना, ये सब दैवलीला नही तो और क्या है?

और एक दैवलीला है कि इस गाँव में विदुषी, तरिगोंडा वेंगमांबा का जन्म लेना। लक्ष्मीनरसिंह भगवान की कृपा से उन्हें ख्याती प्राप्त हुई या उनकी ख्याती के कारण लक्ष्मीनरसिंह स्वामी उतना प्रसिद्ध हुए, यह कहना मुश्किल ही है। पद दोनों का होना संभव है। कानालकृष्णय्या-मंगम्मा दंपतियों को अपर मीराबाई जैसे वेंगम्मा ने जन्म लिया। उनके साथ-साथ भक्ति का भी जन्म हुआ। उसी चिंता में वह बनी रही।

शादी करने पर उसकी दृष्टि बदलेगी, ऐसा सोचकर उनके माता-पिता ने उनकी शादी चित्तूरु, नारगुंटपालेम् के रहनेवाले इंजेटि वेंकटाचलपति से करवाया। तब तक उसका मन तिरुमल का भगवान वेंकटाचलपति पर स्थिर रहे है। ये विषय उन्होंने वेंकटाचलपति से कहा। दुर्भाग्यवश वेंकटाचलपति के मरने के बावजूद, मेरा पति तिरुमलेश ही है, ऐसा कहकर वेंगमांबा ने सुमंगली के रूप में ही रहने लगी।

अपनी बेटी की जिन्दगी सुधारने के लिए कानालकृष्णय्या ने मदनपल्ली के रूपावतारम् सुब्रह्मण्य गुरु की शरण में गया। उन्होने दयालु होकर, वेंगमांबा को मंत्र, तंत्र, यंत्र, आदी के रहस्य तथा योग सूत्रों को सिखाकर, सलाह दिया कि ये सिर्फ बुनियाद हैं, इनके ऊपर भवनों का निर्माण तुम्ही को करना है। हयग्रीव नृसिंह के मंत्रों से वेंगमांबा को दिशानिर्देश प्राप्त हुआ। इससे वे काव्य रचना करने के लिए उद्युत हुई। भगवान वेंकटाचलपति की तलाश में जंगल का रास्ता पकड लिया। रास्ते में मोगिलिपेंटा गाँव के भगवान हनुमान के पास अपनी विद्या की साधना करके, तिरुमल श्रीवारि आज्ञा से वेंकटाद्रि पहुँची। वेंगमांबा का तिरुमल पर पहुँचने की खबर सुनकर, हाथीरामजी मठ के आत्मरामजी महन्त ने, वेंगमांबा को रहने के लिए वराहस्वामी मंदिर के सामने शिलारथ के बगल एक कुटिया दी। पर उसमें ज्यादा समय तक वेंगमांबा ने निवास नही किया।

वे घने जंगल के तुंबुरुतीर्थ चली गयी। वहाँ की एक गुफा में पुष्करकाल तक तपस्या करके,'महायोगिनी' बनकर दिव्य शक्तियों के साथ फिर तिरुमल पहुँची। उनकी दिव्यत्व को जानकर ताळ्ळपाक वंशजों ने अपने घर के बगल रहने की जगह दी। वहाँ तरिगोंडा वेंगमांबा का मठ बना। वराहस्वामी मंदिर के बगल उनका एक बगीचा है। अब उनकी समाधी वहीं पर है। उन्हें दान के रूप में प्राप्त संपत्ति से नित्यपूजाएँ तथा नृसिंह जयंती आदि उत्सव अत्यन्त वैभव से मनाती थी। अपनी कविताओं से, पद्य, गानों से, नाटकों से, विशेषरूप

से यक्षगानों से स्वामी का मनोरंजन करने के अलावा, कोमल फूल मालायें, आत्मीय पूजाएँ तथा पंचभक्ष परमान्न आदि सेवा कैंकर्यों के द्वारा स्वामीजी सेवा में डूबे रहते हैं। इसी कारण से स्वामी की एकान्त सेवा के समय 'मोती की हारती' देने का सौभाग्य शाश्वत रूप से इन्हे मिली। अभी उनके वंशज इसका फल भोग रहे हैं।

वेंगमांबा की रचनाओं को लिखने के लिए 'अष्टघंटक' नाम के आठ सदस्य, हमेशा उनके आस-पास रहते थे। उनकी रचनावों को वे तालपत्रों पर लिखकर, देशभर में प्रसार कर लिया है। लेकिन स्वयं उनके लिए एक भी रचना नही रखा। कुलमिलाकर उनकी रचनाएँ १८ से ऊपर ही है। हर रचना में तरिगोंडा लक्ष्मीनृसिंह तथा तिरुमल वेंकटाचलपति दोनों एक जैसा दिखाई देते है। इसी प्रकार वेंगमांबा ने इंजेटि वेंकटाचलपति को तथा तिरुमल वेंकटाचलपति को एक ही समान गौरव प्रदान की। उनकी रचनावों तथा महिमावों के बारे में जितना भी कहें, कम ही है।

तरिगोंडा के एक वैश्यप्रमुख ने लगभग १९४० के समय में वेंगमांबा का मूर्ति बनवाकर, लक्ष्मीनृसिंह मंदिर में प्रतिष्ठित किया। वहाँ हर रोज मूर्ति की पूजा होती है। वेंगमांबा का जन्म लगभग ई.सन् १७३०, महासमाधि ई.सन् १८१७ हैं।

चारों ओर ऊँचे प्राकार से, तीन मंजिल के राजगोपुर से विरसित श्री लक्ष्मीनृसिंहालय में ९ दिन ब्रह्मोत्सव अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है।

यह क्षेत्र सत्य प्रमाण के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर के बलिपीठ के सामने खडे होकर जो भी सत्य प्रमाण करेगा, उसे अदालत के साथ-साथ सभी को स्वीकार करना होगा। इतना विश्वास है इस सत्यदेव रूपी लक्ष्मीनृसिंह भगवान पर।

यात्रियों को सूचना

१. मुफ्त में सामान परिवहन केन्द्रः तिरुपति के अलिपिरि से और श्रीवारि मेट्टु से पैदल रास्ते में जानेवाले भक्तों को अपने सामान को अलिपिरि और श्रीवारि मेट्टु के पास स्थित मुफ्त सामान परिवहन केन्द्र में देना चाहिए। फिर इस सामान को तिरुमल स्थित सामान परिवहन केन्द्र से वापस लेना होगा।

२. पीने का पानी और सुरक्षाः अलिपिरि से पैदल रास्ते में जानेवाले भक्तों को रास्ते भर पीने के पानी को प्रबंध किया गया है और यात्रियों की सुरक्षा के लिए देवस्थान ने सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति की।

३. तिरुमल में ठहरने के लिए आवास समुदायः भक्तों ने ठहरने के लिए तिरुमल में निःशुल्क आवास समुदाय की व्यवस्था की गयी है। इस में मुफ्त लॉकर, मुफ्त भोजन और शौचालय की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

४. बस की सुविधाः तिरुमल में एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक जाने के लिए मुफ्त में बस की व्यवस्था की गयी है। लगभग १२ बसें इस कार्य में संलग्न हैं। ति.ति.देवस्थान के आध्वर्य में हर ४ मिनिट को एक बस २४ घंटे चलती है।

सप्तगिरि की चोटियों में महाशिवरात्रि पर्व

तेलुगु मूल - श्री जे.बालसुब्रह्मण्यम

हिन्दी अनुवाद - श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

वा'सु'देव इति वा'म'देव इ
त्यस्ति कल्पक महीरुह द्वयं
यद्यहीह 'सुम' भेद संभवः
नास्त्यथापि फलभेद संभवः॥

- अप्पय्या दीक्षित

सातों लोकों में, उससे ऊपरी लोकों वाले, इधर निचले लोकों वाले देख जलने का सुंदर लोक भूलोक है। उन सबकी ईर्ष्या का कारण क्या हुआ होगा? याने?

अत्यंत रमणीय, महिमान्वित दो **कल्पवृक्ष** इस सुंदर भूलोक में पनपे हुए होना उसके लिए प्रधान कारण है। बहुत ही खूब।

पहले कल्पवृक्ष का नाम **वा'सु'देव** है। दूसरे कल्पवृक्ष का नाम तो **वा'म'देव**। ये दिव्यवृक्ष दोनों भक्तों की इच्छा-पूर्ति करने में एक से दूसरा कोई कसर नहीं रखेगा। ऊपर से परस्पर होड़ लगाते रहेंगे। इन दिव्य वृक्षों में **'सुम'** भेद के अलावा फलभेद कतई नहीं होगा। अखंड पुण्य भारत की अवनी में सर्वत्रा व्याप्त हुए ये दोनों पारिजात भक्तों की निरंतर इच्छा पूर्ति करते ही रहते बनते हैं।

खासकर **'सप्तगिरि'** की तलेटियों में तो कहते न बनता है।

मुख्यतया एक और विशेषता यह है। वासुदेव का कल्याण जहाँ भी संपन्न हो जाने पर, वामदेव ही शादी का मुखिया बन कर होता है, इसी तरह वामदेव की शादी के लिए वासुदेव ही खुद आप विवाह का मुखिया बन कर रहेगा। विचित्र लगता है न!

शेषाचल पर 'महाशिवरात्रि'

शेषाचल पर विराजमान वासुदेव-कल्पवृक्ष नागाभरण-भूषित श्रीनिवास है। ऐसा होने पर, इस क्षेत्र में पालक के तौर पर वामदेव नामक कल्पवृक्ष उपस्थित है। वही **'रुद्र'** नाम से पुकारे जाने वाला साक्षात् परमशिव है। निरंतर श्रीवारि आलय की रक्षा करने वाला **'रुद्र'** हर दिन मंदिर में पूजा-पाठ स्वीकारना ही नहीं, तिरुमलक्षेत्र में प्रधानतया **महाशिवरात्रि** पावन पर्व-दिन के शुभ अवसर पर एकादश रुद्र नमक-चमक आदि के वेदमंत्रों की पावन रस-झरी में अभिषेक आदि वैदिक कर्मों से महादेव बनकर विराजता है। क्या यह वार्त्ता निश्चय सत्य है। कहने से, यह बात वास्तव में सच है।

महाशिवरात्रि के पावन महापर्व के शुभ दिन पर सुबह ९.०० बजे तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर से श्रीवारि अर्चकस्वामी लोग, आलय के अधिकारीगण मंगल वाद्यों के समेत होकर जुलूस में जाकर गोगर्भ तीर्थ (पांडव तीर्थ) में

पाताल लोक में कपिलमहर्षि से पूजित शिवलिंग बढ़ते हुए वेंकटाचल के परबत के मूल भाग में स्वयंभू-क्षेत्र श्री कामाक्षी-श्री कपिलेश्वर के गुहालय बनकर विलसित है। शिवलिंग के साथ-साथ पाताल लोक की भोगवती गंगा ऊपर उभर कर बिखर गयी। वही गंगा ''कपिलतीर्थ'' नाम से विख्यात हुई। इसने वेंकटाचल के शिखरों से बिखेरती हुई अनेक तीर्थ-जलों की श्रृंखला व सम्मेलन बन कर अशेष भक्तजनों के लिए पाप-हारिणी तीर्थ बनकर प्रसिद्धि पायी है।

स्थित क्षेत्र पालक **रुद्र** को एकादश नमक-चमक के मंत्रों के पटु पारायण से रुद्राभिषेक, निवेदनों का निर्वहण करेंगे। श्री वेंकटेश्वर के सन्निधान में होनेवाले महाशिवरात्रि के संरंभों में असंख्य भक्तजनों के भाग लेकर दर्शन आदि सांप्रदायिक विधि-विधानों को संपन्न करना एक विशेषता है।

शेषाचल के मूल में महाशिवरात्रि

तिरुमलेश ''उपत्यकाप्रदेशस्थ शिवध्यात मूर्तये नमः'' वाले नाम से नित्य ही अर्चित हुआ हो विराजता है। याने ''परबत के निचले भाग व प्रदेश में स्थित महाशिव से ध्यानित हुआ भगवान'' - ऐसा अर्थ ध्वनित होता है। मतलब यह कि तिरुमल पहाड़ के नीचे विराजमान श्री कपिलेश्वर के साथ स्तुति किये जानेवाला।

पाताल लोक में कपिलमहर्षि से पूजित शिवलिंग बढ़ते हुए वेंकटाचल के परबत के मूल भाग में स्वयंभू-क्षेत्र श्री कामाक्षी-श्री कपिलेश्वर के गुहालय बनकर विलसित है। शिवलिंग के साथ-साथ पाताल लोक की भोगवती गंगा ऊपर उभर कर बिखर गयी। वही गंगा ''कपिलतीर्थ'' नाम से विख्यात हुई। इसने वेंकटाचल के शिखरों से बिखेरती हुई अनेक तीर्थ-जलों की श्रृंखला व सम्मेलन बन कर अशेष भक्तजनों के लिए पाप-हारिणी तीर्थ बनकर प्रसिद्धि पायी है। तिरुमल पधारने वाले यात्री सबसे पहले ब्रह्म-गाय, विष्णुदेव-गोपाल बन कर क्षीराभिषेक किये हुए इस श्री कपिलेश्वर के शिवलिंग के दर्शन कर अर्चना करने का

संप्रदाय बना हुआ है। तिरुमल-तिरुपति देवस्थान वालों का यह मंदिर नित्य के अभिषेक, अर्चना तथा निवेदनों से, भक्तजनों के मंडलों के साथ हर दिन चहल-पहल और वैभवपूर्ण ढंग से होना ही नहीं, बल्कि विशेषकर महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर श्री कपिलेश्वरस्वामी जी के वैभवपूर्ण विधि-विधान के साथ ब्रह्मोत्सव भी संपन्न होते हैं। महाशिवरात्रि के शुभ उपलक्ष्य पर रात को संपन्न होने वाले रजत-नंदीश्वरस्वामी का वाहन-वैभव, उसके अगले दिन घटित होने वाला श्री कामाक्षी-श्री कपिलेश्वरों का कल्याणोत्सव-वैभव बखानते न बनता है।

श्री कपिलेश्वर के अनुग्रह से ही पद्मावती-श्रीनिवासों का विवाह संपन्न हो पाया है। यह पुराणोक्ति बनी हुई है।

दक्षिण के कैलास में ''महाशिवरात्रि''

तस्य दक्षिणकैलासनामकं स्थान मुत्तमम्।
'कालहस्ती'ति विख्यातं शिरोदेशः प्रकीर्तितः।।

- वेंकटाचलमाहात्म्यम् - ब्रह्मांड पुराण।

दक्षिण के कैलास के तौर पर प्रशस्ति पायी हुई ''श्रीकालहस्ति'' क्षेत्र भी शेषाचल पर्वत के शिरोभाग पर ही उपस्थित होकर विलसित है।

पाँच भूतलिंगों में ''**वायुलिंग**'' नाम से प्रसिद्धि पाये यहाँ के ईश्वर श्री (मकोड़ा), काल (सर्प), हस्ति (हाथी) आदिजीवों से भी पूजादिक पाकर, उन्हें मुक्ति प्रदान की थी। उन्हीं के नामों से ''**श्रीकालहस्तीश्वर**'' नामक अपने सार्थक नाम से स्वयंव्यक्त होकर विलसित दिव्यक्षेत्र है यह। यहाँ पार्वतीदेवी ''**ज्ञानप्रसूनांबिका**'' बनकर अपने भक्तों को ज्ञान व इष्ट अर्थों की सिद्धि प्रसादित करती रही है। पूर्व में तिन्नडु नामक किरात भक्त ने निरंतर अपने मुँह से पानी लाकर शिव-लिंग का अभिषेक करके, शिकार किये हुए माँस-खंड को स्वामी को निवेदन में समर्पित करता था। स्वामी ने आखिर उस किरात भक्त की परीक्षा लेकर, उसके दो आँखों को नैवेद्य में स्वीकार करने के उपरांत उसे मोक्ष-

सिद्धि का प्रसादन किया था। इस वृत्तांत के उपरांत उस किरात भक्त-तिन्नडु अपने नेत्रों के समर्पण करने के कारण, **भक्त कन्नप्पा** नाम से मशहूर बन गया था।

''नत्कीर'' नामक कवि शिवजी के शाप-वशात् कोढा बन बैठा क्योंकि उस महानुभाव ने साक्षात् शिवजी से ही होड़ लगाया था कि पार्वती माँ के केश या जटाबन्ध सहज ही परिमल गन्धों से भरा हुआ होता है। अपने अज्ञान पर पश्चात्ताप युक्त किये नत्कीर से आपनी शाप-मुक्ति के वास्ते उसे कैलास जाने का परमशिव ने आदेश दिया था। सुब्रह्मण्यस्वामी की आज्ञा से भक्तकवि नत्कीर ने कैलासपर्वत के समान-रूपी श्रीकालहस्ति में जाकर, वहाँ के वायु-लिंगेश्वरस्वामी की उपासना कर, अपने घोर शाप से मुक्ति पायी थी।

निरंतर सेवा-अर्चना विधियों, राहु-केतु दोषों की पूजाओं तथा नित्य कल्याण संरंभों के वैभव गरिमा से विराजमान श्रीकालहस्तीश्वर क्षेत्र का अनुनित्य हजारों की तादाद में भक्त लोग संदर्शन करते रहेंगे। मुख्यतया, महाशिवरात्रि के पावन पर्व के संरंभों के शुभ अवसर पर, तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी के देवस्थान के यजमानी ज्ञानप्रसूनांबिका और श्रीकालहस्तीश्वर पुण्य दम्पतियों को वस्त्र-समर्पण कर संभावित करते हैं। स्वर्ण मुखी नदी के तट पर दक्षिण-काशी बन कर विराजित श्रीकालहस्तीश्वर स्वामी का दिव्यक्षेत्र की प्रसक्ति श्री वेंकटाचल-क्षेत्र के इतिहास में दर्शन देने के कारण, यह बेधड़क कहा जाता है कि श्रीकालहस्ति दिव्य क्षेत्र तिरुमलगिरि के इतिहास से भी बहुत प्राचीन है।

भूकैलास में महाशिवरात्रि

प्रसिद्धः पुच्छदेशोयं 'श्रीशैल' इति विश्रुतः
श्रीशैलस्य प्रदेशेऽस्मिन् नीलकंठाश्रमे शुभे।।

- वेंकटाचलमाहात्म्यम् - ब्रह्माण्ड पुराण

एक योजन के विस्तीर्ण के साथ, तीस योजनों की लंबाई में व्याप्त सर्पाकार में विराजते शेषाचल पर्वत के अग्रभाग या शिरोभाग पर श्री वेंकटेश्वर, पूँछ के भाग में श्रीशैल महाक्षेत्र में मल्लिकार्जुन के विराज होने की प्रशस्ति चली हुई है।

परमेश्वर, द्वादश ज्योतिर्लिंगों में दूसरा मल्लिकार्जुन महालिंग के रूप में उसी प्रकार पार्वतीदेवी के अष्टादश शक्ति पीठों में, भ्रामरीशक्ति के विख्यात पीठ के तौर पर विलसित दिव्य क्षेत्र है - **श्रीशैलम्**।

पर्वत नामक एक भक्तमहाशय की इच्छा के अनुसार श्री पर्वत के नाम पर यहाँ लिंग के रूप में विलसित भोलाशंकर है यहाँ के शंकर भगवान। तत्पश्चात् 'चन्द्रमति' नाम की भक्तिन की आकांक्षा के अनुसार उसे कुंद यानी जुही के फूलों की माला के रूप में धारण कर, श्रीगिरिमल्लिकार्जुन के रूप में विलसित यहाँ बनाथा। इसी प्रकार पार्वतीदेवी कैलास से शिवजी को तलाशते हुए भूलोक

में पधार कर, अरुणासुर नामक राक्षस वीर को भ्रमर के रूप में संहार कर स्वयं महाशक्तिशाली भ्रामरी शक्तिवाले पीठ के रूप में श्रीमल्लिकार्जुन के संग आ पहुँच कर विराजने लग गयी थी।

जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी महाराजजी के संबंन्ध में यह वृत्तांत अत्यंत प्रसिद्ध है कि उन्होंने यही रह कर, इसी क्षेत्र में 'श्री शिवानंदलहरी' नामक जगत् प्रसिद्ध स्तोत्र की रचना की थी और अनेकानेक शैव-धर्म-संबंधित उत्कृष्ट रचनाओं का प्रणयन भी किया था।

इस तरह भूकैलास के नाम पर प्रख्यात इस श्रीशैलक्षेत्र में निरंतर आदि-दम्पती श्री भ्रमरांबिका-मल्लिकार्जुनस्वामियों की नित्यप्रति की सेवाएँ, वारोत्सव, शरन्नवरात्रियों के साथ साथ ''महाशिवरात्रि'' के महा पावन पर्व के शुभ अवसर पर कई उत्सव तथा नगर-यात्राओं का निर्वाह अत्यंत वैभवोपेत ढंग से किया जाता है। प्रधानतया महाशिवरात्रि के पावन पर्व के शुभ अवसर पर संपन्न होने वाले श्रीमहालिंगोद्भव पवित्र पुण्य काल में पहर पहर पर महान्यासपूर्वक रुद्राभिषेकों का अत्यंत वैभवपूर्ण विधि से निर्वाह किया जाता है। उस दिन आधी रात के घनघोर अंध तमस में गर्भालय के विमान-शिखर से चारों ओर धीरे **'पागा'** कहे जाने वाले लंबे वस्त्र को एक दिगंबर पद्मशाली भक्त के द्वारा लिपटाया जाना बहुत विशेष संप्रदाय है। एक एक गज के हिसाब से संवत्सर-भर में ३६५ गजों के वस्त्र को यह भक्त बुनाकर, महाशिवरात्रि के पावन पर्व के शुभ अवसर पर स्वयं आप लपेटता है। तिरुमल श्री वेंकटेश्वर, महाशिवरात्रि के भक्ति-संरंभ से संभरित उस पुण्य त्योहार के शुभ समय में, श्रीभ्रमरांबिका-समेत श्री मल्लिकार्जुन स्वामीजी को नूतन वस्त्र तथा परिधानों को समर्पित करना अनूचान एक संप्रदाय के रूप में सैकड़ों सालों से चला आ रहा है।

''नंदिमंडल'' में महाशिवरात्रि

श्रीशैल महाक्षेत्र के निकट ही महानंदिक्षेत्र बसा हुआ है। पूर्व में 'नंदि' नामक भक्त ने शिवजी को रिझाकर यह

वर माँग लिया था कि वह क्षेत्र पूरा नंदिमंडल बन कर ख्यातनामा हो जाय तथा श्रीमहादेव के साक्षात्कार का यह स्थल अपने नाम पर पुकारा जाय। उस भक्त महाशय के अनुरोध के अनुसार परमेश्वर **'महानंदीश्वर'** नाम से, पार्वतीजी **'कामेश्वरी'** नाम से प्रख्यात होकर वहाँ विराजने लगे। महानंदि पुण्यक्षेत्र के लगे प्रांत में इर्द-गिर्द नव-नंदियों के बसे हुए होने के कारण वह पुण्य प्रान्त नवनंदि क्षेत्र अथवा नंदिमंडल के नाम पर पुकारे जाने लगा है। यह क्षेत्र नित्योत्सवों के साथ 'महाशिवरात्रि' के पावन शुभ संदर्भ में संपन्न होने वाले ब्रह्मोत्सवों में हजारों की तादाद में भक्तलोगों का भाग लेना होता है।

'नारायणवर' में महाशिवरात्रि

श्री पद्मावती-श्रीनिवासों की परिणय-वेदी ही 'नारायणवर' है। यह कलियुग की कथा-नायकी के पिता और कलियुग के कलित सम्राट श्री वेंकटेश्वर के ससुर आकाशराजा की राजधानी बनी हुई थी। नारायणवर मंदिरों का नगर है। और भी, नारायणवर लगभग पाँच हजार साल पहले तीन कोटि देवी-देवताओं-समेत पधार कर, राजा आकाश की पुत्री, अयोनिजा, अपर लक्ष्मीदेवी की छाया पद्मावतीदेवी से परिणय किया हुआ परम पवित्र दिव्य स्थल है। और भी, उस दिव्य कल्याण-घटना के प्रतीक के रूप में विलसित श्री कल्याणवेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर को पाया हुआ परम पावन दिव्य स्थल है नारायणवर। तीन कोटि की

देवी देवताओं की पद-यात्रा का प्रत्यक्ष प्रमाण पुण्य स्थल है- नारायणवर।

कल्याण - दंपती श्रीपद्मावती - श्रीनिवासों का हल्दी में डुबोये द्विकूलों के साथ दर्शन किये हुए श्री शक्ति विनायकस्वामी का मंदिर, श्री चंपकवल्ली-समेत श्री पराशरेश्वरालय, श्री मरकतांबिका-संयुत श्री अगस्त्येश्वरालय, श्री कल्याणवीरभद्रस्वामी का मंदिर, श्री अवनाक्षम्माजी का मंदिर आदि अति प्राचीन दिव्य क्षेत्र आज भी उन दिनों के परम वैभव को बिखेरते हुए, उत्सव-गरिमा के साथ शोभायमान होकर विराजते हैं।

नारायणवर के श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी जी के मंदिर के साथ-साथ ऊपर के सभी मंदिर ति.ति.देवस्थानों के पर्यवेक्षण में अंगरंग वैभव के साथ, भक्तजनों के पल्ले पारिजात बन कर प्रकाशमान बने हुए हैं। मुख्य रूप से ''महाशिवरात्रि'' के पावन पुण्य त्योहार के उपलक्ष में, उन मनोहारी मंदिरों में महान्यासपूर्वक रुद्र के अभिषेक, अर्चनादिक पूजा-विधियाँ एवं ब्रह्मोत्सव श्रीनिवास के पर्यवेक्षण में आज भी संपन्न होते हुए रहना अति महत्वपूर्ण विशेषता रखता है।

तोंडवाडा क्षेत्र में महाशिवरात्रि

तिरुमल क्षेत्र से आधे ही योजन पर, दक्षिण की दिशा में सुवर्णमुखी नदी के तट पर श्री अगस्त्येश्वर स्वामी का

सूचना

- **अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।**
- **भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।**
- **दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।**
- **मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।**
- **पानी और बिजली को वृथा न करें।**

एक महत्वपूर्ण क्षेत्र विलसित है, जिसे ''रुद्र पादों का मुक्कोटि क्षेत्र'' नाम से पुकारा जाता है। अगस्त्य महर्षि के द्वारा प्रतिष्ठित मशहूर **'महाशिवलिंग'** जिसके पार्श्व में ही पार्वतीदेवी **''आनंदवल्ली''** नाम से विराजमान है।

नूतन वधूवर श्री पद्मावती और श्रीनिवास आदिवराह क्षेत्र तिरुमल जाते हुए तोंडवाडा में उस समय स्थित अगस्त्य महर्षि के संदर्शनार्थ रुके थे। लोपामुद्रा तथा अगस्त्य महर्षि दंपतियों ने उन नूतन परिणीता दंपतियों को आतिथ्य देते हुए, ''स्वामी! श्रीनिवास! नव विवाहित दंपति छः महीनों तक क्षेत्र पर्यटन व यात्रा नहीं करनी चाहिए। अतएव आप लोग हमारा आतिथ्य स्वीकार कर, तदुपरांत वराहक्षेत्र पधारें।'' कहते हुए विज्ञापन किया था। उन मुनिदंपतियों के विज्ञापन के अनुसार यहाँ बसे रहने के संकेत में वहाँ श्री कल्याणवेंकटेश्वरालय के नाम पर श्रीनिवासमंगापुरम् क्षेत्र में बसा है। ति.ति.देवस्थान के निर्वहण में हुए श्रीनिवास-मंगापुरम् क्षेत्र के अति समीप में श्रीपद्मावती श्रीनिवास के दर्शित ''श्री तोंडवाडा श्री आनंदवल्ली-समेत श्री अगस्त्येश्वर'' क्षेत्र का भक्तलोग दर्शन कर सकते हैं।

आन्ध्रप्रदेश की देवादायशाखा के आध्वर्य में हुए इस प्रमुख क्षेत्र में नित्य अभिषेक, अर्चना, आराधनाओं के साथ-साथ ''महाशिवरात्रि'' के संदर्भ में महत्वपूर्ण वैभव ढंग से उत्सवों का संपन्न होना भी विशेष की बात है।

''तलकोना'' क्षेत्र में महाशिवरात्रि

इन्हींके अलावा सप्तगिरि की तलहटियों में ठीक वेंकटाद्रि के पश्चिमभाग में विलसित प्रसिद्ध पुण्यक्षेत्र ''तलकोना'' है। निरंतरामृत जलपात से, प्रकृति के रमणीय दृश्यों के साथ खूबसूरती बिखेरते हुए तलकोना वाले दिव्यक्षेत्र में श्री सिद्धेश्वरस्वामीजी के महाकाय शिवलिंग के साथ-साथ 'सिद्धेश्वरीदेवी' हर दिन अर्चित होने के साथ-साथ, विशेष वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न होती हुई ''महाशिवरात्रि'' के

अभिषेक तथा अर्चनाओं में भाग लेकर भक्तजन चरितार्थ बन रहे हैं।

इसी प्रकार श्री शुकमहर्षि के आश्रम-प्रांत तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी के विलसित दिव्यक्षेत्र से थोडी ही दूरी पर **'योगिमल्लवरम'** नामक क्षेत्र स्थित है। श्री शुकब्रह्मा के दादा पराशरमहर्षि के द्वारा प्रतिष्ठित योगिमल्लवरम् के 'श्रीपराशरेश्वरस्वामीजी' निरंतर अभिषेक व अर्चनाओं के साथ-साथ विशेषतया ''महाशिवरात्रि'' - जैसे पावन पुण्य विशेष दिनों में घनतर महान्यासपूर्वक रुद्राभिषेकों के साथ विलसते इस क्षेत्र में असंख्य भक्तजनों से कोलाहल मच जायेगा।

इस कदर सप्तगिरि की तलहटियों में उपस्थित शैवक्षेत्रों में महाशिवरात्रि के पावन पर्व के शुभ अवसर पर ''ओं नमःशिवाया! हर हर महादेव! शंभो! शंकर!!'' आदि नाम-स्मरण की घोषा से गुंजन बना रहता है। इतना ही नहीं, अभिन्न एवं एकाकार वासुदेव तथा वामदेवों में एक रमा का रमण और दूसरा उमा का रमण है। बहुत खूब।

एक तो शेषशायी है, तो दूसरा उस शेष को कंठाभरण बना लिया हुआ महोदय है। एक ने त्रिपुरासुरों को खपाया, तो दूसरा मुरासुर का संहार किया था। इनमें एक बाणासुर का दुश्मन है, तो दूसरा असमबाण मन्मथ का शत्रु है। ऐसे अप्रतिम, असमान दिव्य लक्षणों से विराजते 'वासुदेव', 'वामदेव' दोनों की स्तुति करते हुए, चलो, नतमस्तक बन जायें।

मा रमण मुमारमणं फणधरतल्पं फणाधराकल्पम्
पुरमथनं मुरमथनं वंदे बाणारि मसमबाणारिम्।।

- अप्पय्या दीक्षित

ॐ हरये नमःशिवाय

'मानव सेवा ही... माधव सेवा'

आर्ष धर्म में बताया गया है।
सह प्राणियों को किसी भी तरह रक्षा की जाय, तो अनंत पुण्यफल हमें और हमारे परिवार को मिलेगा। कलियुग वैकुण्ठ के भगवान का आवास स्थान तिरुमल में रक्तदान करना परम पवित्र कार्य है।
आपके रक्त से अन्य व्यक्ति का प्राण बचता है।

तिरुमल में रक्तदान कीजिए।

तिरुमल अश्विनी अस्पताल में प्रतिदिन सुबह 8 बजे से लेकर दोपहर 12 बजे के अंदर कोई भी रक्तदान कर सकता है।

दूरभाष - 0877-2263601

आइये... रक्तदान कीजिए!
संकटग्रस्त व्यक्ति को सहायता कीजिए!!

तिरुपति एवं उसके आसपास के दर्शनीय क्षेत्र

श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर : आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमल पर्वत के पदभाग में तिरुपति स्थित है। वैष्णवधर्म के प्रवर्तक श्री रामानुज से संबंध रखनेवाला यह पुरातन शहर है। ११३० ए.डी. में प्रख्यात वैष्णवधर्म के प्रवर्तक श्री रामानुज ने श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर का निर्माण कर, परिसर के छोटे प्रांत को आवास योग्य बनाकर, उसे 'तिरुपति' का नाम रखा। पुराणों के अनुसार, यहाँ के मूर्ति की वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक एवं महान आचार्य श्री रामानुज ने प्रतिष्ठा की। भगवान तो शयन मुद्रा में है। इस प्रांगण में श्री आण्डाल, श्री पार्थसारथी एवं श्री वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर हैं।

श्री कोदंडराम स्वामी मंदिर : तिरुपति रेल्वेस्टेशन से एक कि.मी. दूरी पर श्रीराम का मंदिर है। लंका से वापस आते वक्त सीता लक्ष्मण सहित श्रीराम के तिरुपति आगमन के स्मरण में इस मंदिर का निर्माण किया गया है। शिलालेख के आधार से १५वीं शताब्दी में सालुव नरसिंह का अभ्युदय के लिए नरसिंह मोदलियार नामक व्यक्ति ने इस मंदिर का निर्माण किया।

श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर : तिरुपति से तीन कि.मी. दूरी पर भगवान शिव का मंदिर है। कपिल महर्षि द्वारा प्रतिष्ठापित होने के कारण भगवान को कपिलेश्वर और तीर्थ को कपिलतीर्थम् का नाम प्रचलित हो गया है।

अलमेलुमंगापुरम् (तिरुचानूर) : तिरुपति से ५ किलोमीटर दूरी पर यह मंदिर स्थित है। श्री वेंकटेश्वरस्वामी की पत्नी श्री पद्मावती देवी का मंदिर है। कहा जाता है कि तिरुचानूर में विराजमान श्री पद्मावती देवी के दर्शन के बाद ही तिरुमल-यात्रा की सफलता प्राप्त होगी। श्री पद्मावती देवी मंदिर की पुष्करिणी को 'पद्मसरोवर' कहा जाता है। पुराणों के अनुसार भगवती देवी ने इस पुष्करिणी के पद्म में स्वयं अवतार लिया है।

श्रीनिवासमंगापुरम् : तिरुपति से १२ किलोमीटर दूरी पर यह मंदिर स्थित है। ग्राम की आग्नेय दिशा में श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का मंदिर है। पुराणों में कहा गया है कि श्री वेंकटेश्वरस्वामी ने श्री पद्मावती देवी से विवाह करने के बाद तिरुमल जाने के पूर्व कुछ समय तक इस क्षेत्र में ठहरे। १६वीं सती में ताल्लपाक चिन्न तिरुवेंगडनाथ ने इस मंदिर का जीर्णोद्धारण किया।

नारायणवनम् : तिरुपति से लगभग २२ किलोमीटर की दूरी पर आग्नेय दिशा में स्थित मंदिर में श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी विराजमान है। इसी पवित्र क्षेत्र में आकाशराजा की पुत्री श्री पद्मावती देवी एवं श्री वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह सम्पन्न हुआ था। इस महान घटना की याद में आकाशराजा ने इस मंदिर का निर्माण करवाया।

नागलापुरम् : इस मंदिर में श्री वेदनारायण स्वामी विराजमान हैं। तिरुपति से लगभग ६५ कि.मी. दूरी पर आग्नेय दिशा में यह मंदिर स्थित है। विजयनगर शैली को प्रतिबिंबित करनेवाली यह सुन्दर नमूना है। गर्भगृह में दोनों ओर श्रीदेवी व भूदेवी सहित मत्स्यावतार रूपी श्री विष्णु की मूर्ति विराजमान हैं। मंदिर की विशिष्टता का प्रमुख कारण है, सूर्याराधना। हर वर्ष मार्च महीने में सूर्य की किरणे तीन दिन तक गोपुर से होती हुई गर्भगृह में स्थित मूर्ति को स्पर्श करती हैं। इसे सूर्य द्वारा भगवान की आराधना मानी जाती है। विजयनगर सम्राट श्रीकृष्णदेवराय ने अपनी माता के अनुरोध पर इस मंदिर का निर्माण कराया।

अप्पलायगुंटा : अप्पलायगुंटा में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर है। तिरुपति से १५ कि.मी. दूरी पर स्थित है। ब्रह्मोत्सव तथा प्लवोत्सव आदि को बडे पैमाने पर मनाया जाता है। इस प्राचीन मंदिर में श्री पद्मावती देवी एवं आंडाल की मूर्तियाँ विराजमान हैं। कार्वेटिनगरम् के राजाओं से निर्मित इस मंदिर के सामने श्री आंजनेय स्वामी की मूर्ति है। दीर्घकालीन व्याधियों के निवारण के लिए यहाँ विराजमान श्री आंजनेय स्वामी की भक्तों द्वारा पूजार्चना की जाती है।

कार्वेटिनगरम् : तिरुपति से ५८ कि.मी. दूरी पर पुत्तूर के निकट यह मंदिर स्थित है। रुक्मिणी, सत्यभामा सहित श्री वेणुगोपाल स्वामी के दर्शन कर सकते हैं। प्राचीन काल में नारायणवनम् के राजाओं ने इसका निर्वहण किया। हनुमत्समेत श्री सीताराम व लक्ष्मण की एकशिला मूर्ति इस मंदिर में विराजमान हैं।

मार्च महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेषराशि - मांगलिक कार्य सम्पादन होंगे, विवाहार्थियों के लिए विवाह योग बनेगा। नौकरी में अधिकारियों से विवाद सम्भव है, जिस कारण नौकरी में स्थानान्तरण होगी। सूक्षबूक्ष से अपने अधिकारों का प्रयोग करें।

वृषभराशि - शनि की ढैय्या के प्रभाव से आर्थिक व शारीरिक कष्ट होंगे। जन-समाज में मान-सम्मान प्रतिष्ठा में ह्रास होने के साथ अपवाद और विघ्न-बाधाएँ आ सकती है। शान्ति समृद्धि के लिए इष्टदेव की पूजा, आराधना करना श्रेयस्कर होगा।

मिथुनराशि - विवाहार्थियों के लिए विवाह योग बनेगा, मांगलिक कार्य सम्पादन होंगे। सहयोगियों से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। शारीरिक सुख सामान्य रहेगा। भूमि, भवन का लाभ। समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होगी।

कर्कराशि - इस महीने आर्थिक लेन-देन से संतुष्ट होंगे और बेचैनी से उबर जाएँगे। कार्यक्षेत्र में नकारात्मक व स्वार्थी लोगों के चेहरों से मुखोटे हटा सकेंगे। रचनात्मकता एवं स्वतंत्रता के मौके मिलने वाले हैं इसलिए नए अवसरों के लिए तैयार रहें।

सिंहराशि - यात्रा, पर्यटन, मूर्ति प्रतिष्ठा विद्यालयारम्भ में रुचि बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें शारीरिक कष्ट रोग, धनहानि हो सकता है। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा पूर्ण परिश्रम करें। व्यापार तथा कृषी क्षेत्रों में लाभ।

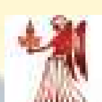

कन्याराशि - दुर्घटनाओं से बचे। आर्थिक कार्यों में सफलता। व्यापार में लाभ तथा नौकरी में पदोन्नति होगी। पित्त, उदर विकार होने की सम्भावना है। दाम्पत्य सुखों में कमी हो सकता है। भगवान शिव की आराधना से आरोग्यता प्राप्त होगी।

तुलाराशि - उच्चस्थान प्राप्ति योग। बन्धुओं की चिन्ता से आपको परेशानी होगी। व्यापारियों के कारोबार में मंदी बना रहेगा। अनावश्यक यात्रा से धन व्यय। उच्चपदाधिकारि से वैमनस्ता असंतोष जिससे मनमुटाव की सम्भावना बनी रहेगी।

वृश्चिकराशि - सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति तथा प्रभावशाली कार्य करने का अवसर मिलेगा। अपने अहं और गुस्से को काबू में रखें। लोगों एवं स्थितियों से सही ढंग से निपटेंगे। हनुमानजी की आराधना करें।

धनुराशि - लम्बे समय से रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। धननाश, चोट-चपेट दुर्घटना की सम्भावना रहेगी। निरर्थक दौड़-धूप, रोगों से कष्ट, कानूनी वाद-विवाद। छात्रों के लिए अनुकूल समय बना रहेगा।

मकरराशि - शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। राजकीय शासकीय लोगों से मेल मिलाप रखें लाभदायक हो सकता है। उदर पीड़ा तथा पाचन शक्ति की दुर्बलता से कष्ट होगा। लाभ से अधिक हानि होगी। हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।

कुम्भराशि - विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त होंगे, अध्ययन में रुचि बढेगी। रत्न व्यापार से लाभ उत्तरोत्तर धन वृद्धि। नित्य कार्य क्षेत्र से धनहानि। ऋण पीड़ा आपको सता सकता है। पत्नी का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। गणपति की आराधना करें मङ्गलमय होगा।

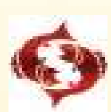

मीनराशि - दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा। सन्तान प्राप्ति योग। अविवाहिता के लिए विवाह योग। नौकरी क्षेत्र में उत्तरोत्तर अवसर प्राप्त होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा मिलेगी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

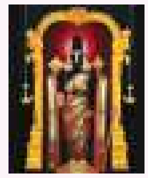

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि आध्यात्मिक मासिक पत्रिका (तेलुगु, तमिल, हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड, संस्कृत)

घर-घर तक 'सप्तगिरि'! यह श्री बालाजी की अक्षर संपत्ति!

कलियुग प्रत्यक्ष दैव श्री बालाजी के दिव्य वैभव को

हर महीने... सप्तगिरि पत्रिका में देखिए... पढाइये...

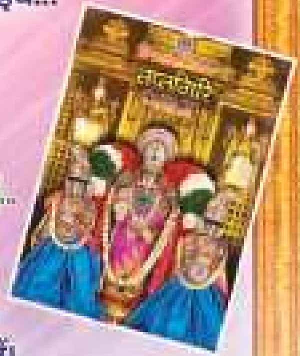

भगवानजी का दर्शन के लिए
अनेक उपाय व साधन हैं।
कदम-कदम पर प्रणाम स्वीकारने वाले,
आर्तत्राण परायण भगवान की कुछ लोग पुष्पार्चना करते हैं...
कुछ लोग अक्षर पुष्पों से आराधना करते हैं।

श्रीवारि के अक्षर प्रसाद 'सप्तगिरि' को
पढ़ें और पढ़ायें, यह भी उनकी एक सेवा हैं।

हर महीने... 'सप्तगिरि' पढ़े... अपने रिश्तेदारों से पढ़ायें!
हर महीने अपने घर में ही भगवानजी के दर्शन कर लीजिए...
तिरुमल संबंधित विशेषताएँ जान लें।

'सप्तगिरि' की अभिवृद्धि में भाग लीजिए।
सप्तगिरि मासिक पत्रिका को चंदा भरिये, भराइये।

चंदा विवरण

एक प्रति...	रु. ५.००
वार्षिक चंदा...	रु. ६०.००
जीवन चंदा...	रु. ५००.००
विदेशियों को वार्षिक चंदा...	रु. ८५०.००

सूचना - संस्कृत भाषा के जीवन चंदा की सुविधा नहीं है।
केवल वार्षिक चंदा मात्र ही उपलब्ध है।

'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के बारे में
अन्य विवरण केलिए कार्यकालीन
समयों में संपर्क करें - दूरभाष :
कार्यालय - ०८७७-२२६४५४३
डी.टी.पी. अनुभाग - ०८७७-२२६४३५१
संपादक - ०८७७-२२६४३६०

कार्यालय का पता -
प्रधान संपादक
'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका कार्यालय
ति.ति.दे प्रेस कांपौंड,
के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०७.

सूचना, सुझाव व शिकायतों के लिए संपर्क करें-
sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY
Published by Tirumala Tirupati Devasthanams 25-02-2019
Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

क्षीरसागर से उत्पन्ना श्री महालक्ष्मी को
नीरज को जिसने आसन बनाया हो,
उस देवी को नीराजन, आरती दे रहा हूँ।

- अन्नमय्या

(दि. २१.०३.२०१९ को श्री महालक्ष्मी जयंती)